ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

वैशाख २०८२ मई २०२५

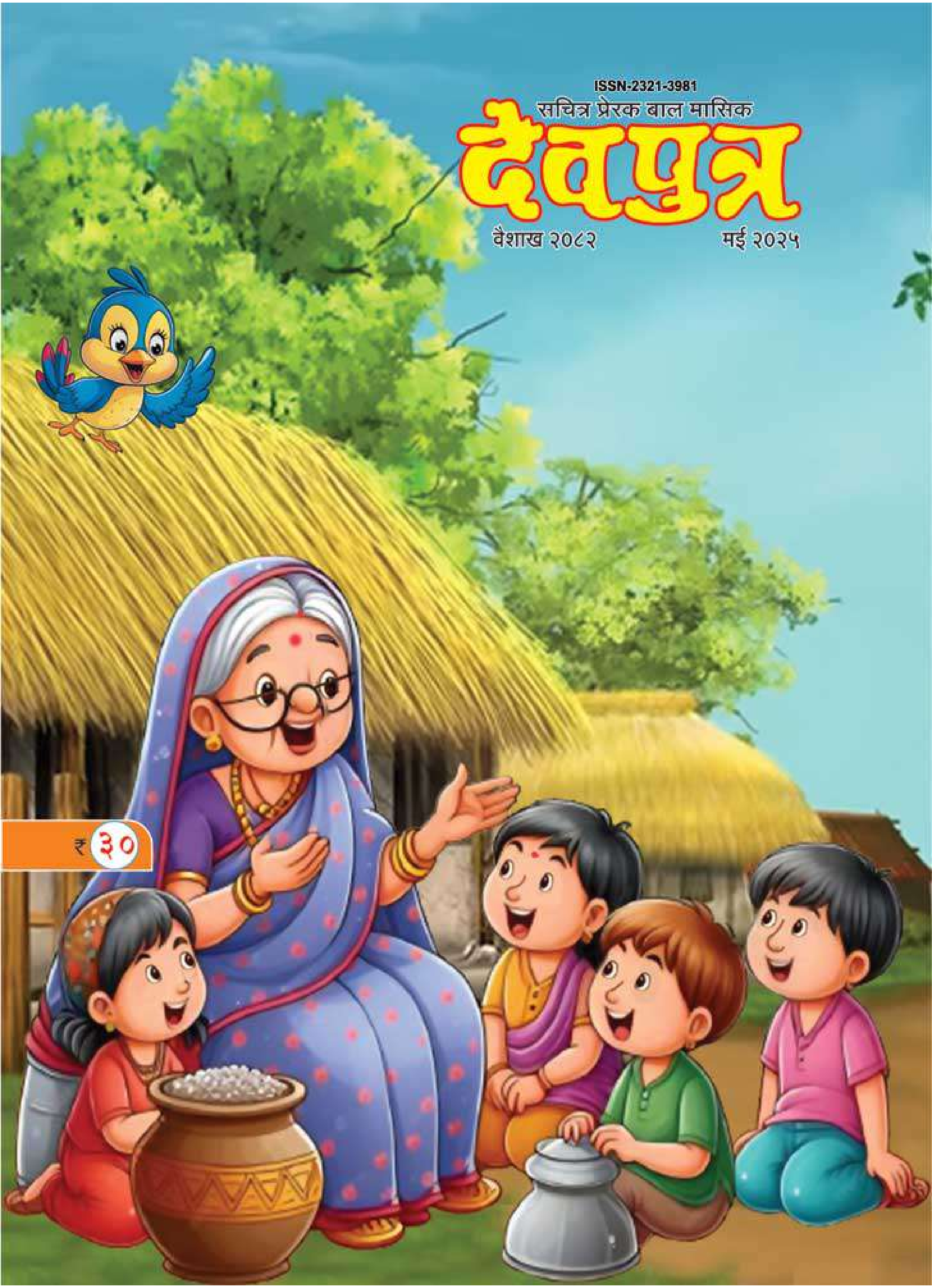

वर्ष २०२४ के लिए 'देवपुत्र' द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२४

पुरस्कृत कृति– चूहा मोबाइल ले भागा
(हिन्दी बाल कविता)
रचयिता– श्री श्याम पलट पांडेय
(अहमदाबाद, गुजरात)
पुरस्कार– ५०००/–

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल–साहित्य पुरस्कार २०२४

प्रथम– गुजराती कहानी
बंटी के सूरज दादा
मूल लेखिका– श्रीमती पुष्पा बेन अंताणी
अनुवाद– रजनीकांत एस. शाह
(कर्जन, गुजरात)
पुरस्कार– १५००/–

द्वितीय– उड़िया कहानी
सात चकुली चौदह चे
मूल लेखक– भाबेश चंद्र कॅरॅ
अनुवाद– डॉ. रश्मि वार्ष्णेय, (मुंबई, महाराष्ट्र)
पुरस्कार– १२००/–

तृतीय– मराठी कहानी 'बाहों में आकाश'
मूल लेखिका– स्व. मालती दांडेकर
अनुवाद– सौ. पद्मा चौगांवकर,
(गंजबासौदा, म. प्र.)
पुरस्कार– १०००/–

प्रोत्साहन– अंगिका कहानी 'टैंगटा'
मूल लेखक– अज्ञात (लोक कथा)
अनुवाद– प्रा. प्रतिभा राजहंस,
(भागलपुर, बिहार)
पुरस्कार– ५००/–

प्रोत्साहन– कन्नड कहानी 'मिट्‌टी से सोना'
मूल लेखक– अज्ञात (लोक कथा)
अनुवाद– रीता जैन, (बैंगलुरु, कर्नाटक)
पुरस्कार– ५००/–

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२४

पुरस्कृत कृति– मेरी प्रिय शिशु कथाएँ
लेखक– श्री. प्रकाश मनु,
(फरीदाबाद, हरियाणा)
पुरस्कार– २१००/–

श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२४

प्रथम– दो दोस्तों की कहानी
बाल लेखिका– कु. गरिमा पाल,
(लोरमी, छत्तीसगढ)
पुरस्कार– १५००/–

द्वितीय– गर्मी की छुट्‌टी में जल संरक्षण
बाल लेखिका– कु. हर्षिका कुमारी
(तरणीडीह, झारखण्ड)
पुरस्कार– ११००/–

तृतीय– ईमानदार बच्चा
बाल लेखिका– कु. स्वाति जायसवाल
(लोरमी, छत्तीसगढ)
पुरस्कार– १०००/–

प्रोत्साहन– सरस्वती पूजा में पूरे हुए लक्ष्य
बाल लेखक– श्री. निलय भारद्वाज
(कोलकाता, पश्चिम बंगाल)

प्रोत्साहन– केशू का अनोखा जन्मदिन
बाल लेखक– किसलय भारद्वाज
(कैथ, बिहार)
पुरस्कार– ५००/–

सभी पुरस्कृत प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

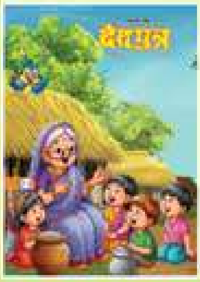

वैशाख	२०८२	▪	वर्ष	४५
मई	२०२५	▪	अंक	११

संरक्षक

कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:

व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

न जाने कब से, पर हमने जाना तब से तो बचपन में गरमियाँ आने का एक अर्थ 'छुट्टी' होता है। 'गरमियों की छुट्टी' यानी नाना–नानी, मामा–मौसी के यहाँ घूमने जाना, या परिवार के साथ किसी मनचाहे स्थान पर भ्रमण, या घर ही में बैठे पूरी दुपहरी या देर रात तक खेल, अन्त्याक्षरी, गप्पगोष्ठी। आम, तरबूज, खरबूज, कुल्फी, आइस्क्रीम, यानी गरमी की छुट्टी। ऐसे कई विशेष अर्थ एवं काम इस 'गरमी की छुट्टी' शब्द से प्रकट होते हैं। लेकिन एक अर्थ और समझना चाहिए कि छुट्टी यानी उस रुचि को पूरी करने का अवसर जो छूटी है या जिन्हें हम वर्षभर के अन्य सुनिश्चित कामों में कर नहीं पाते लेकिन उन्हें करने का मन बहुत करता है। ऐसे कामों को अभिरुचि कहा जाता है। छुट्टी का एक अर्थ फुटकर भी होता है अर्थात् ऐसे काम कर लेने का अवसर जो थोड़े समय में हो सकते हैं।

अभिरुचि हमारे जीवन को सरस बनाती है अभिरुचि के बिना हमारा जीवन यान्त्रिक हो जाता है उसकी सरसता नष्ट होकर वह उबाऊ होने लगता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को बचपन से अपनी अभिरुचि जानना और उसके विकास की योजना बनाना चाहिए। छुट्टी इसका स्वर्णिम अवसर होता है और बचपन सबसे अनुकूल अवस्था।

बड़े होकर हम अनेक ऐसे कामों में व्यस्त हो जाते हैं जो हमारी दिनचर्या बनकर एक बड़ा कालखण्ड घेरे रहता है वह तथा बाकी जिम्मेदारियाँ पूरी करते हुए अभिरुचियाँ प्राय: जीवन के किसी कोने में खड़ी रह जाती हैं और राह तकती हैं कि कब हम उन्हें भी समय देंगे। बचपन में यह अवसर सुलभ होता है।

अनेक अभिरुचियों में से एक–दो का चयन कर उनसे, अनेक मित्रों में जैसे एक–दो पक्कमपक्के दोस्त होते हैं वैसी दोस्ती करना और प्रत्येक वर्ष मूल्यांकन करना कि हम उनके साथ कितने आगे बढ़े हैं। बचपन में अपनी अभिरुचि की ठीक पहचान कर उन्हें अच्छा से अच्छा अभ्यास करके पक्का कर लिया तो वे जीवनभर आपको हर उदास क्षण में या अकेले में साथ देंगी और संभव है आपकी 'कला' बनकर पूरे समाज के लिए प्रेरणा व आनंद का कारण भी बनें। अपनी वास्तविक अभिरुचि को पूरी क्षमता से विकसित करें गरमियों की छुट्टी में, ऐसी शुभकामना सहित–

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी
- कटहल ने दौड़ाया -संजीव जायसवाल 'संजय' ०५
- सपना और शीतल -डॉ. प्रभा पंत ३०
- उल्का पिण्ड -महेश कुमार केशरी ४२

छोटी कहानी
- मुर्गा बोला कुकड़ू कूँ -नीलम राकेश २२

लघुकथा
- विनम्रता -मीरा जैन ३६
- कर्तव्य -डॉ. पूजा अलापुरिया ५०

नाट्यांश
- लोकमाता अहिल्या -उमेश कुमार चौरसिया १२

आलेख
- जीना है तो हँसना सीखो -बी. आर. नलवाया ३२

प्रसंग
- वह अभिनय -निष्णा बनर्जी १९

कविता
- श्रम से मिलता मीठा... -डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी ४१
- माँ का प्यार -डॉ. अलका जैन 'आराधना' ४५
- उज्ज्वल दिन उज्ज्वल.. -रामनरेश उज्ज्वल ५०
- कुल्फीवाला -गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' ५१

स्तंभ
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक १८
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी २०
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' २४
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३४
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४०
- छ: अँगुल मुस्कान - ४१
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ४६
- आपकी पाती - ४७
- पुस्तक परिचय - ४८

बौद्धिक क्रीडा
- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी २१
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी २३
- पहेलियाँ -कैलाश त्रिपाठी ४४

चित्रकथा
- लाल बुझक्कड़ काका के .... -देवांसु वत्स ११
- अहसान -संकेत गोस्वामी ३७
- परवाह नहीं -देवांसु वत्स ४९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कटहल ने दौड़ाया

– संजीव जायसवाल 'संजय'

कटहल के एक पेड़ पर चुन्नी–मुन्नी नाम की दो गिलहरियाँ थीं। दोनों दिनभर इधर से उधर फुदकती रहतीं।

चुन्नी चंचल स्वभाव की थी। किसी काम को करने से पहले अधिक सोच–विचार न करती। किन्तु मुन्नी बहुत समझदार थी। किसी काम को करने से पहले अच्छी तरह से सोच–विचार करती थी।

एक दिन चींचीं चींटी एक छोटे से दाने को लुढ़काते हुए लिए जा रही थी। चुन्नी ने पूछा– ''चींचीं! तुम इतने छोटे से दाने को लेकर कहाँ जा रही हो ?''

''दादा! छोटा कहाँ है ? यह तो मेरे वजन से बीस गुना भारी है।'' चींचीं ने बताया।

''वह तो ठीक है लेकिन तुम इसे लेकर कहाँ जा रही हो ?''चुन्नी ने कहा।

''इसे लेकर अपने घर में रखूँगी। खराब ऋतु में जब बाहर निकलना कठिन होता है तब आराम से बैठकर इसे खाऊँगी।'' चींचीं ने बताया और दाने को लुढ़काते हुए आगे बढ़ गई।

चुन्नी को यह बात बहुत पसंद आयी। उसने इधर–उधर देखा। जिस पेड़ पर वह रहती थी उस पर बड़े–बड़े कटहल लगे हुए थे।

''मुन्नी! चलो हम भी थोड़े से कटहल तोड़कर अपने घर में रख लेते हैं। जब कभी ऋतु खराब होगी तब आराम से उसे खायेंगे।'' चुन्नी ने सलाह दी।

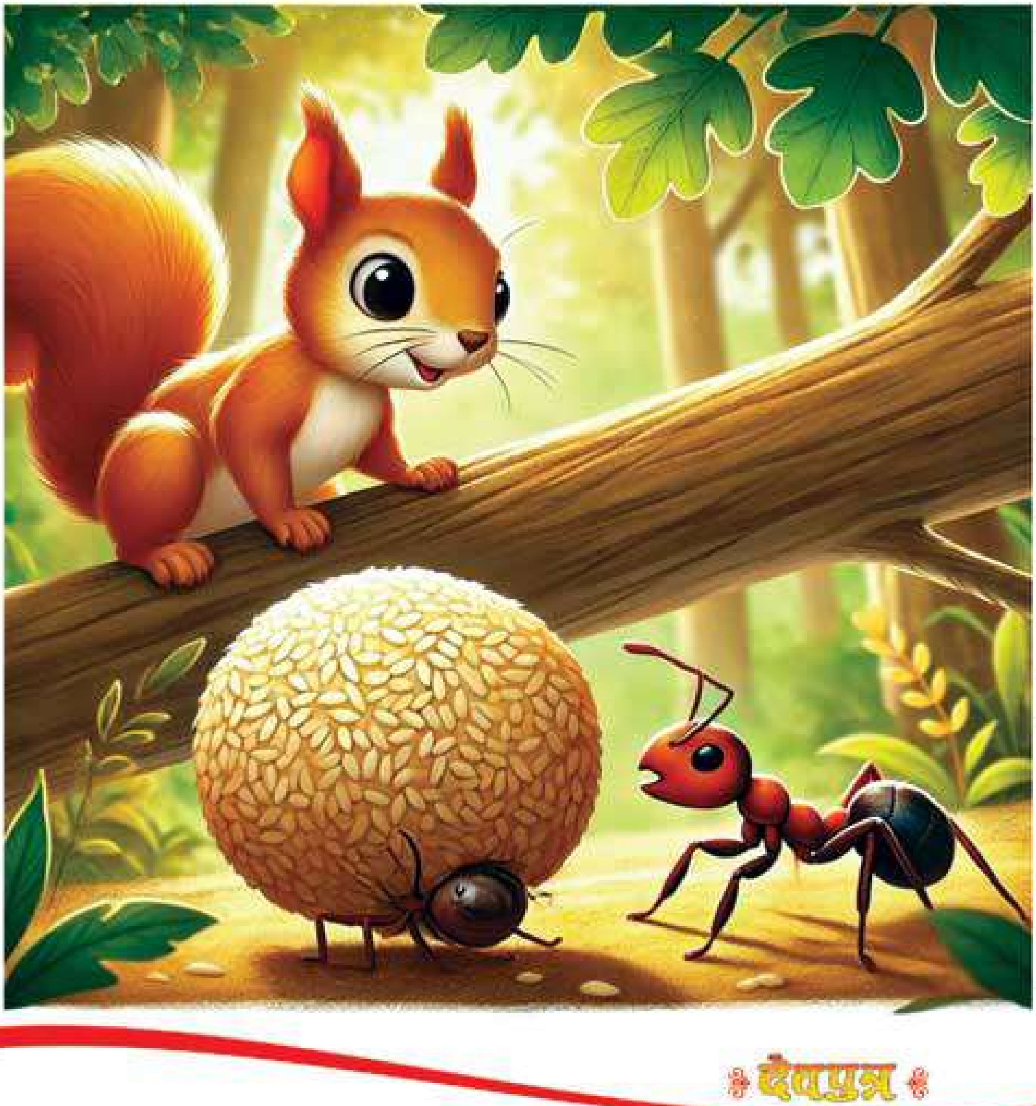

मुन्नी ने हँसते हुए समझाया– ''चीटिंयों का शरीर बहुत छोटा होता है। उनकी चाल भी बहुत धीमी होती है। वे हर ऋतु में घर से बाहर भी नहीं निकल सकती इसलिए भोजन जमा करती हैं। हम लोग तो पलक झपकते ही जहाँ चाहें वहाँ पहुँच सकते हैं। हमें दूसरों की नकल करके भोजन जमा करने की आवश्यकता नहीं है।''

''तुम्हारा सोचना ठीक नहीं है। बड़े–बूढ़े कह गए हैं कि संकट की घड़ी के लिए पहले से ही व्यवस्था

करना बुद्धिमानी होती है। इसलिए मैं तो अपने घर में चार–पाँच कटहल अवश्य रखूँगी।'' चुन्नी ने जोर दिया।

''कटहलों का छिलका इतना मोटा होता है कि न तो उसे हम खा पाएँगे और न ही इतने बड़े कटहलों को रखने के लिए हमारे घर में स्थान है। इसलिए यदि रखना है तो चार–पाँच छोटे से बेर या जामुन रख लो।'' मुन्नी ने समझाया।

''तुम्हें तो मेरे हर काम में टोंकने की आदत है।'' चुन्नी ने मुँह बनाया फिर बोली– ''जब कटहल हमारे पेड़ पर लगे हैं तो हम जामुन और बेर ढूँढ़ने दूर क्यों जाएँ? मैं तो कटहलों को ही जमा करूँगी और बाद में उन्हें खाने का कोई उपाय खोज लूँगी।''

''कभी–कभी तुम बिलकुल बच्चों जैसी बातें करने लगती हो।'' मुन्नी ने हँसते हुए कहा तो चुन्नी को क्रोध आ गया और वह मुँह फुलाकर बैठ गई।

मुन्नी जानती थी कि चुन्नी का क्रोध थोड़ी देर में ठंडा पड़ जाएगा। इसलिए उसने उसकी ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। वह टहलते–टहलते थोड़ा दूर निकल गई।

उधर चुन्नी ने ठान लिया था कि वह दो–चार कटहलों को घर में पहुँचा कर ही मानेगी ताकि मुन्नी की बोलती बंद हो सके। मुन्नी के जाते ही वो सर्र से एक ऊँची डाल पर चढ़ गयी जिस पर कटहल लगे हुए थे।

उसने एक बड़े से कटहल को पसन्द किया और उसे काटने लगी। किन्तु कटहल का डंठल बहुत मोटा था। काटते–काटते चुन्नी के दाँत दुखने लगे लेकिन वह कट ही नहीं रहा था। किन्तु चुन्नी ने हार नहीं मानी। थोड़ी देर आराम करने के बाद वह कटहल के ऊपर सवार हो गयी और उसके डंठल को दूसरी ओर से कुतरने लगी। इस बार उसे सफलता मिली। थोड़ी ही देर में कटहल डंठल से अलग हो गया और रॉकेट की भाँति नीचे चल पड़ा।

''हाय मर गयी।'' चुन्नी की चीख निकल गयी। वह कटहल के ऊपर बैठी हुई थी। इसलिए उसके साथ वह भी नीचे गिर रही थी।

पेड़ की डालियों और पत्तियों को चीरते हुए कटहल तेजी से नीचे जा रहा था। चुन्नी को लग रहा था कि आज जान नहीं

बचेगी। अचानक कटहल एक डाल से टकराया। झटका लगने से चुन्नी उछल पड़ी। संयोग से उसके हाथ में पेड़ की एक पतली डाल आ गयी। उसने उसे कस कर पकड़ लिया।

'धड़ाम' तभी तेज आवाज सुनाई पड़ी। चुन्नी ने नीचे झाँका। ऊँचाई से गिरने के कारण पूरा कटहल फट गया था।

''बच गए वरना आज मेरी भी हालत ऐसी ही होती।'' चुन्नी के शरीर में सिरहन दौड़ गई।

वह वहीं घबरायी सी बैठी रही। थोड़ी देर बाद जब घबराहट कुछ कम हुई तब उसे अपनी मूर्खता पर हँसी आने लगी। वह कटहल पर सवार होकर उसके डंठल को काट रही थी। ऐसे में तो उसे कटहल के साथ नीचे गिरना ही था।

इस बार वह ऐसी गलती नहीं करेगी। कटहल से दूर रहकर उसके डंठल को काटेगी। चुन्नी ने मन ही मन निर्णय किया। इस बार वह काफी सावधान थी। उसने ऐसा कटहल छाँटा जो पेड़ की एक डाल पर अटका हुआ था। वहीं से उसने दूसरी डाल पर बने अपने घर की ओर देखा फिर बोली- ''यह ठीक रहेगा। इसे चीटियों की तरह लुढ़काते हुए आराम से अपने घर तक पहुँचा सकती हूँ।''

उसने पूरे परिश्रम के साथ उस कटहल के डंठल को काटना प्रारंभ कर दिया। थोड़ी ही देर में डंठल कट गया किन्तु इस बार कटहल नहीं गिरा क्योंकि वह पेड़ की डाल पर अटका हुआ था।

अपनी बुद्धि पर मुस्कुराते हुए चुन्नी ने कटहल को धक्का दिया। किन्तु वह टस से मस न हुआ। उलटे छिलके के मोटे काँटे उसकी हथेलियों में चुभ गए। हलका-सा दर्द हुआ और उसके चिह्न दोनों हथेलियों पर उभर आए। नई आफत! चुन्नी पलभर के लिए झिझकी किन्तु बात मुन्नी के सामने इज्जत की थी इसलिए चुन्नी हार नहीं मानना चाहती थी। उसने काँटों को छूकर देखा। 'मोटे हैं, बस हलका सा दर्द होगा लेकिन ये हथेली में घुसेंगे नहीं' उसने हिसाब लगाया।

'चींचीं चींटी तो अपने से बीस गुना भार को लुढकाते हुए ले जा रही थी। फिर मैं इसे क्यों नहीं लुढ़का सकती ?' उसने सोचा फिर अपने दोनों हाथों

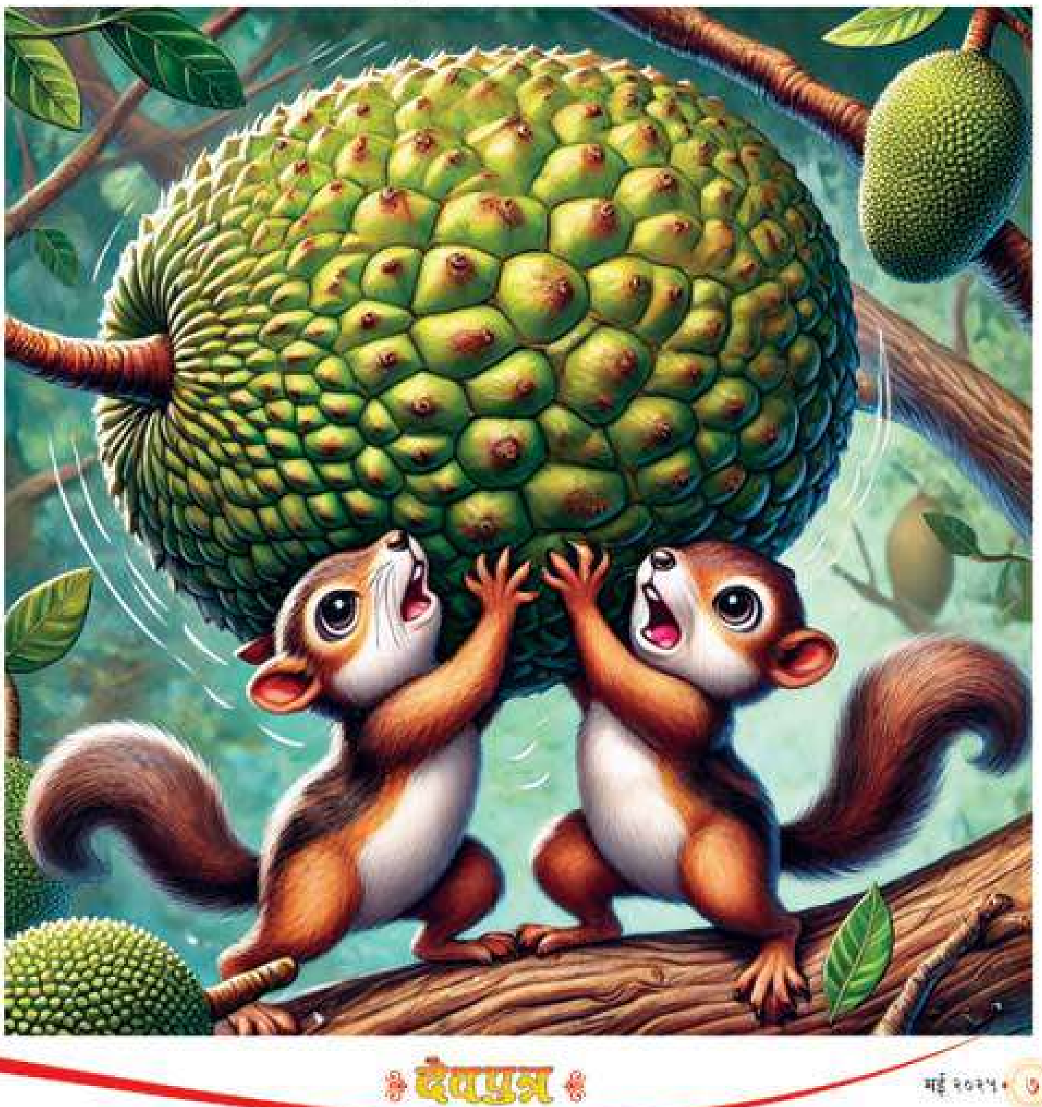

को कटहल पर टिका कर पूरी ताकत से धक्का मारते हुए नारा लगाया, ''जोर लगा के हैय्या।''

इस बार धक्का जोर का लगा था। कटहल अपने स्थान से हिला और डाल पर ही लुढ़कता हुआ तेजी से आगे चल दिया।

''अरे! कहाँ जा रहा है? रुक जा। रुक जा मेरे भाई! रुक जा।'' चुन्नी तेजी से उसके पीछे दौड़ी। अपने नन्हे-नन्हे हाथों से उसने कटहल को रोकने का प्रयास किया किन्तु उसे रोक नहीं पाई।

कटहल ये जा तो वो जा। चुन्नी को लगा कि इस बार भी उसकी मेहनत बेकार चली जाएगी। किन्तु उसका भाग्य अच्छा था। एक स्थान पर पेड़ की दो शाखाएँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं। कटहल वहीं जा कर अटक गया।

''अरे! मुझसे बच कर कहाँ जाएगा? देखा पकड़ लिया न तुझे।'' चुन्नी निकट पहुँचते हुए चिल्लाई। कटहल आराम से वहाँ बैठा हुआ था। चुन्नी ने उसे दो चपत जमाई फिर सोचा कि यदि इसे धक्का दूँगी तो यह फिर भाग लेगा। इसे आराम से लुढ़काते हुए ले चलना चाहिए।

उसने पीछे से जाकर दोनों हाथों से जोर लगाया लेकिन कटहल टस से मस न हुआ। परेशान होकर चुन्नी ने अपने सिर को भी कटहल के नीचे लगाया और जोर से हुँकारी भरी। इस बार कटहल अपने स्थान से थोड़ा-सा खिसका। चुन्नी प्रसन्न हो गई। अपने सिर और हाथ से कटहल को उठा धक्का लगाते हुए वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। मोटे काँटों से हथेलियों में पीड़ा हो रही थी किन्तु उसने हार नहीं मानी।

किन्तु उससे एक गलती हो गई। डाल के जिस भाग पर वह कटहल टिका हुआ था वह नीचे के बजाय थोड़ा-सा ऊपर की ओर उठा हुआ था और आगे जाकर फिर नीचे झुका था। चुन्नी इसे देख नहीं पाई और पूरी ताकत से कटहल को धक्का देने में जुटी हुई थी।

कटहल बहुत भारी था। वरन चार कदम धकेलने में ही चुन्नी की साँस फूलने लगी। किन्तु चींचीं चींटी की याद कर वह कटहल को धकेलने में जुटी रही। किन्तु थोड़ा और आगे बढ़ते ही उसकी हिम्मत बिल्कुल जवाब दे गई।

अब तो बड़ी अजीब स्थिति उत्पन्न हो गई थी। भारी भरकम कटहल चुन्नी के सिर के ऊपर था और काँटों को वह मोटा समझ रही थी वे चुभे जा रहे थे। अब तो उसकी हालत और खराब। मुन्नी हमेशा उसे समझाती रहती थी कि आँख बंद करके दूसरों की नकल नहीं करना चाहिए। किन्तु चुन्नी कभी उसकी बात पर ध्यान नहीं देती थी लेकिन आज उसे सीख मिल चुकी थी।

वह चिल्लाने लगी- ''मुन्नी! मुझे इस संकट से बचाओ। मैं अब हमेशा तुम्हारा कहना माना करूँगी।''

मुन्नी उसी समय वापस लौट रही थी। चुन्नी की चीख सुन उसने ऊपर देखा तो कलेजा मुँह को आ

गया। वह दौड़ कर उस डाल पर पहुँच गई। चुन्नी थक कर बिल्कुल चूर हो गई थी। भारी-भरकम कटहल उससे संभाले नहीं संभल रहा था। उसके हाथ थर-थर काँप रहे थे। उसकी हालत देख मुन्नी ने दौड़कर कटहल को थाम लिया।

''मुन्नी! तुम इसे छोड़ दो वरना मेरे साथ तुम्हारी भी चटनी बन जाएगी।'' चुन्नी चिल्लाते हुए बोली।

''मेरी बहन! संकट में मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ सकती।'' मुन्नी ने कहा फिर समझाते हुए बोली- ''घबराओ नहीं! घबराने से कठिनाइयाँ और बढ़ जाती हैं। शांत मन से इस संकट से बचने का कोई उपाय सोचो।''

''सोचने का काम तो तुम्हारा है। किन्तु मैं सोचती ही होती तो इस संकट में क्यों फँसती?'' चुन्नी डर के कारण रोने लगी।

''चुन्नी! सुना है कि पेड़-पौधों में भी जान होती है। इस कटहल से प्रार्थना करो कि यह हमें छोड़

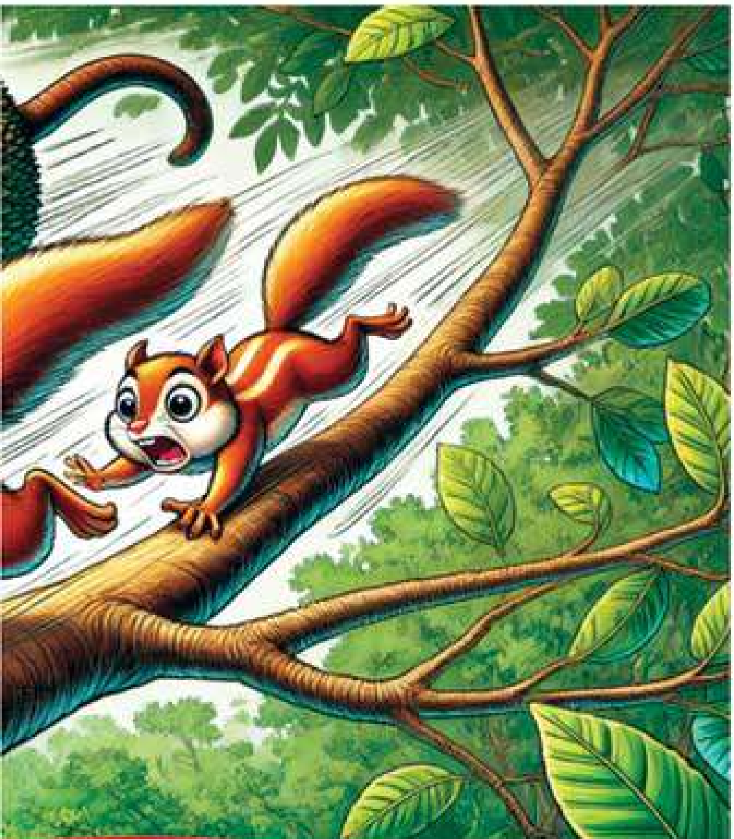

दे।'' मुन्नी ने कुछ सोच कर उपाय बताया।

''कटहल भैया! कटहल भैया! हमें छोड़ दीजिए।'' चुन्नी ने प्रार्थना की।

किन्तु कटहल टस से मस न हुआ। वह चट्टान की तरह उन दोनों की खोपड़ी पर डटा रहा।

''अपनी डाल से अलग होने पर यह कटहल बेजान हो गया है। इसीलिए हमारी प्रार्थना नहीं सुन पा रहा है। तुम जल्दी से कोई दूसरा उपाय सोचो।'' चुन्नी ने हाँफते हुए राय दी।

कुछ सोच कर मुन्नी ने एक योजना बनाई। इसमें थोड़ा-सा खतरा था लेकिन इसके अलावा और कोई उपाय न था। अत: चुन्नी मान गई।

दोनों ने अपने हाथों को मजबूती से कटहल पर टिका कर एक-दूसरे की ओर देखा। फिर मुन्नी ने नारा लगाया- ''एक धक्का और दो।''

''मोटे कटहल को फोड़ दो।'' चुन्नी ने भी नारा लगाया और दोनों बहिनों ने एक साथ कटहल को धक्का देकर डाल से नीचे गिराने का प्रयास किया। कटहल थोड़ा-सा पीछे खिसका। चुन्नी-मुन्नी बिना एक पल गँवाए पीछे पलट कर भाग लीं। किन्तु कटहल भी कोई कम न था। नीचे गिरने के बजाए वह उसी डाल पर लुढ़कते हुए उन दोनों के पीछे लपका।

''चुन्नी! भाग.... जल्दी भाग। कटहल आ गया।'' मुन्नी पूरी शक्ति से चिल्लाई।

दोनो जान हथेली पर लेकर भागीं और सर्र से दूसरी शाखा पर चढ़ गईं। कटहल लुढ़कता हुआ नीचे जा गिरा।

'धड़ाम!' तेज आवाज हुई और कटहल के परखच्चे उड़ गये। चुन्नी-मुन्नी एक-दूसरे के गले से लिपट गईं। चुन्नी को शिक्षा मिल चुकी थी। उसने अब बिना सोचे-समझे किसी की नकल करने से हाथ जोड़ लिए थे।

- लखनऊ (उ. प्र.)

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : interview@suryafoundation.org Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए एक प्रतिष्ठित संस्थान है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना और उन्हें समाजसेवा के काम में जोड़ना। हमें संघ के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले तथा शारीरिक रूप से सक्षम युवकों की आवश्यकता है। इच्छुक आवेदक आवेदन कर सकते हैं। Selected candidates को interview की प्रक्रिया से गुजरना होगा।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद सूर्या साधना स्थली कैंपस में 6 माह की ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके पश्चात एक वर्ष के लिए सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित सेवा कार्यों में On Job Training (OJT) दी जाएगी।

Graduate Management Trainee (GMT)

- **योग्यता** – वर्ष 2025 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास हो जिन्होंने पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों।
- **आयु** – 18 वर्ष से कम।
- **ट्रेनिंग + पढ़ाई** – सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) में भेजा जायेगा। OJT के साथ–साथ MBA या MCA तक की पढ़ाई करने का खर्च संस्था द्वारा वहन किया जाएगा।
- **मानदेय** – प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 5,000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगी। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ–साथ 11वीं में 8,000/-, 12वीं में 10,000/-, Graduation Ist year में 12,000/-, IInd Year में 15,000/-, IIIrd Year में 18,000/-, MBA / MCA Ist Year में 22,000/-, MBA / MCA IInd Year में 27,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA / MCA पूरा होने के बाद 40,000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन/ मानधन इससे अधिक भी हो सकता है।

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बॉयोडाटा के साथ–साथ यदि आपने NCC / NSS / संघ शिक्षा वर्ग / कार्यकर्ता विकास वर्ग–प्रथम, द्वितीय / प्राथमिक शिक्षा वर्ग / शीत शिविर / Surya Foundation PDC आदि कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें। सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हों तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।

कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना CV / आवेदन भेजें। CV / आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 | Email : interview@suryafoundation.org

Last Date of Application - 31 May 2025

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

लोकमाता अहिल्या

– उमेश कुमार चौरसिया

भैया बहिनो! **लोकमाता अहिल्याबाई होळकर** के त्रिशताब्दी वर्ष में आपने 'देवपुत्र' के धारावाहिक स्तंभ में अनेक जानकारी प्राप्त कीं। इस माह त्रिशताब्दी समारोह का समापन है इस अवसर पर लोकमाता के उत्तरार्द्ध पर केन्द्रित प्रसिद्ध नाटककार **श्री. उमेश कुमार चौरसिया** के लम्बे नाटक 'लोकमाता अहिल्या' के कुछ नाट्यांश प्रस्तुत हैं– **संपादक**

नाट्यांश – एक

(महेश्वर के महल में दरबार में अहिल्याबाई सिंहासन पर बैठी हैं, तुकोजी और कुछ दरबारी भी बैठे हैं। तभी कुछ बुनकर स्त्री व पुरुष आते हैं।)

सभी– महारानी सरकार की जय हो। लोकमाता अहिल्याबाई की जय हो।

अहिल्या– (हाथ उठाकर शांत रहने को कहते हुए।) मुझे महारानी मत कहिए मैं तो राज्य की सेविका ही हूँ।

एक पुरुष– आप तो हमारी माता हैं..... लोकमाता..... हमारी मातोश्री.....।

दूसरा पुरुष– मातोश्री अहिल्याबाई की....

सभी– जय।

एक महिला– मातोश्री आपके महेश्वर आने से ही हम सबका और इस सम्पूर्ण नगरी का विकास होने लगा है।

दूसरी महिला– हाँ आपने पौराणिक माहिष्मती की नगरी महेश्वर को मालवा की राजधानी बनाकर इसका गौरव और भी बढ़ा दिया है मातोश्री...

अहिल्या– निर्मल नर्मदा के पावन तट पर बसे महेश्वर में आना मेरे लिए तो आध्यात्मिक सुख का कारण बना है, नर्मदा के तो कण-कण में शंकर है, यह शिव की ही महिमा है जिनकी प्रेरणा ने मुझे यहाँ आने पर विवश कर दिया।

तुकोजी– महेश्वर पौराणिक महत्व के साथ-साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, यहाँ चालुक्य और परमार जैसे वंशजों की गौरवशाली परम्परा रही है। पावन नर्मदा के तट पर स्थित अनके तीर्थ स्थल तो महेश्वर को निश्चित ही आराध्य शिव का साक्षात् भान कराते हैं।

एक पुरुष– और आपने तो इस दिव्य भूमि को हमारी कर्मभूमि बनाकर हम सबका उद्धार कर दिया है मातोश्री!

एक महिला– आपने हम बेघर बुनकरों के लिए यहाँ मकान बनवाकर बसाया और हमारी कारीगरी को मान दिया मातोश्री!

दूसरा पुरुष– आपसे मिले प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के कारण ही साड़ी बुनने की हमारी कला को आगे बढ़ने का अवसर मिला है, महेश्वरी साड़ी के नाम से हमारी कारीगरी को देशभर में प्रतिष्ठा मिली है

मातोश्री।

दूसरी महिला– आज हम सभी बुनकर परिवार अच्छे से काम भी कर पा रहे हैं और पालन–पोषण के लिए पर्याप्त आमदनी भी नियमित हो रही है। यह सब आप ही के कारण हो पाया है मातोश्री! आपके इस उपकार ने हमारा जीवन ही सुधार दिया है सरकार!

एक पुरुष– कला पुजारी मातोश्री अहिल्याबाई की

सभी– जय।

एक पुरुष– हम सब की उद्धारक महारानी अहिल्याबाई सरकार की.....

सभी– जय।

अहिल्या– (हाथ उठाकर शांत रहने को कहते हुए।) मेरी जयकार की आवश्यकता नहीं है। यहाँ जो कुछ भी मैं कर पाई हूँ वह बाबासाहेब मल्हारराव सरकार प्रेरणा से ही हुआ है। उन्हीं ने सर्वप्रथम महेश्वर में व्यापारियों और कारीगरों को बसाने का काम आरंभ किया था। मैंने तो उनके काम को ही आगे बढ़ाने का प्रयत्नभर किया है और महेश्वरी साड़ी की प्रतिष्ठा तो आप लोगों की कुशल कारीगरी के कारण स्थापित हुई है... अद्भुत है आपकी कला, नमन करती हूँ आप सभी कर्मवीर कलाकारों को.... (तभी सेवक आता है।)

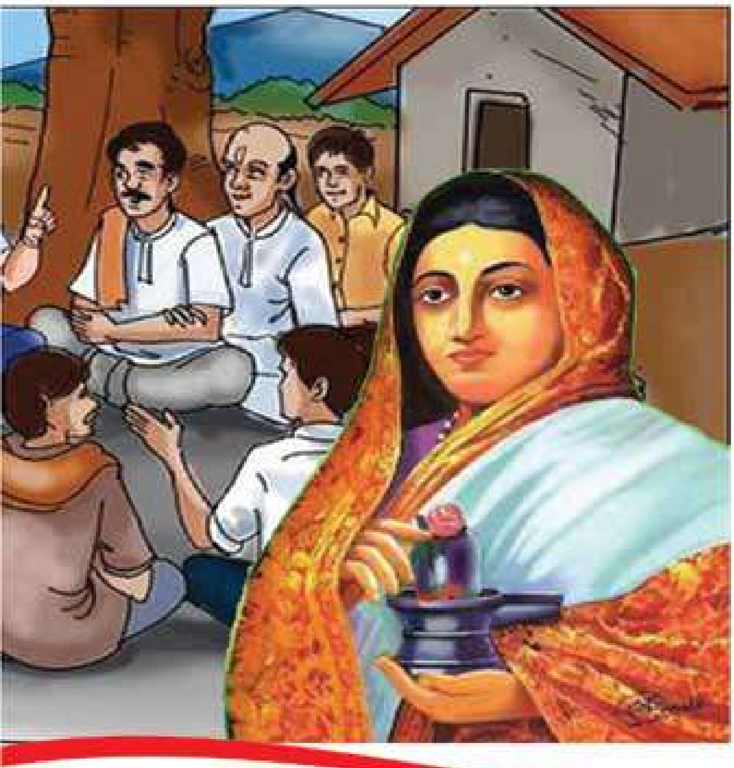

सेवक– (झुककर प्रणाम करते हुए।) सरकार दो महिलाएँ दरबार में आना चाहती हैं।

तुकोजी– आने दो उन्हें।

(सेवक जाता है, दो महिलाएँ आती हैं। एक महिला ने बड़ी–सी पोटली भी ले रखी है।)

तुकोजी– कहो क्या कहना है?

एक महिला– सरकार! मेरे पति देवीचंद इन्दौर के बड़े व्यापारी थे। उनका अकस्मात् निधन हो गया है और मेरे कोई संतान भी नहीं है जो उनकी संपत्ति की सार–संभाल करे।

अहिल्या– तो किसी नाते–रिश्तेदार की संतान को दत्तक ले लो, तुम्हारी भी देखभाल हो सकेगी और व्यापार की भी।

एक महिला– आपकी बात ठीक है मातोश्री! किन्तु इस संसार में किस पर विश्वास करूँ समझ नहीं आता? स्वार्थ और भौतिक लालसा ने मनुष्य से मानवीय संवेदना तक को छीन लिया है। कोई सेवा करेगा अथवा अपना ही हित साधेगा कुछ कहा नहीं जा सकता।

अहिल्या– तो फिर क्या चाहती हो तुम?

एक महिला– मेरी जो भी धन–संपत्ति है वह मैं आपको सौंप देना चाहती हूँ मातोश्री!

अहिल्या– किन्तु मुझे ही क्यों?

दूसरी महिला– इसलिए मातोश्री कि हमने देखा है आप प्रजा के हित के लिए दिन–रात जतन करती रहती हैं..... आपने मजदूरों, भीलों, आदिवासियों और अनाश्रित लोगों पर बहुत उपकार किया है....।

अहिल्या– आप कौन हैं बहिन! आपकी क्या समस्या है?

दूसरी महिला– समस्या कोई नहीं मातोश्री, मैं

भी इस बहन की तरह ही विधवा हूँ, मेरे पति भी बड़े जागीदार थे, अकूत संपत्ति छोड़कर गए हैं वे और अब वह सम्पूर्ण धन–संपत्ति मैं भी आपको सौंपना चाहती हूँ।

अहिल्या– (विचार करते हुए) देखिए बहिन आप जानती ही हैं कि धन–संपत्ति की मुझे कोई आवश्यकता नहीं, जो धन आप देना चाहती हैं उसका उपयोग भी जनकल्याण के लिए हो यही आपकी भी इच्छा है और मेरा भी यही प्रयत्न रहेगा। इसलिए मेरा एक निवेदन है कि आप यह धन राजकोष में देने की अपेक्षा स्वयं इसका सदुपयोग करें। जहाँ भी आवश्यकता हो वहाँ कुएँ, बावड़ी खुदवाएँ, धर्मशाला का निर्माण करवाएँ।

तुकोजी– वाह बाईसाहेब! आपने धन के सदुपयोग का सर्वोत्तम उपाय बता दिया है।

अहिल्या– आप दोनों चाहें तो हमारे प्राचीन तीर्थ क्षेत्रों का जीर्णोद्धार भी करवा सकती हैं.... एक स्थान तो मेरी दृष्टि में भी है।

एक महिला– अवश्य बताइए मातोश्री!

अहिल्या– खरगोन के निकट कुंदा नदी के तट पर अनेक श्रद्धालु आते रहते हैं वहाँ पर घाटों का निर्माण करवाया जा सकता है... और चाहें तो मंदिरों का निर्माण करवा सकते हैं।

दूसरी महिला– जी सरकार! मैं नगर में श्री गणेश मंदिर का निर्माण करवाऊँगी।

एक महिला– आपने तो हमें धन के सही उपयोग और जीवन के लक्ष्य का भान करवा दिया है मातोश्री... धन्य हैं आप और धन्य हैं हमारा मालवा आप जैसा कुशल शासक पाकर।

दोनों महिलाएँ– मातोश्री अहिल्याबाई होळकर की जय... जनकल्याणी अहिल्याबाई की जय... (जयकार करते हुए जाने लगती हैं।)

नाट्यांश – दो

(महेश्वर के महल में दरबार में अहिल्याबाई सिंहासन पर बैठी हैं, तुकोजी और कुछ दरबारी भी बैठे हैं। तभी एक सेवक आता है।)

सेवक– (झुककर प्रणाम करते हुए) आई साहेब! एक ब्राह्मण आपसे मिलने आए हैं।

अहिल्या– आने दीजिए उनको।

(सेवक जाता है, एक ब्राह्मण हाथ में पोथी लिए हुए आता है।)

अहिल्या– आइए ब्राह्मण देव! सादर प्रणाम करती हूँ (उठकर प्रणाम करती हैं।) कहिए कैसे आगमन हुआ आपका?

ब्राह्मण– (झुककर प्रणाम करते हुए) प्रणाम लोकमाता। चारों दिशाओं में हो रहे आपकी कीर्ति के गुणगान से प्रभावित होकर ही यहाँ आया हूँ मातोश्री। (दोनों हाथ उठाकर काव्यात्मक गुणगान करते हुए) जिन तीर्थस्थल को आततायी औरंगजेब ने ध्वस्त किया, विश्वनाथ, सोमनाथ, घृष्णेश्वर और वैद्यनाथ का आपने जीर्णोद्धार किया। राजस्थान के पुष्कर तीर्थ में बनवाया सुंदर मंदिर और धर्मशाला, श्रीनाथ की नगरी नाथद्वारा में भी मंदिर और कुएँ–बावड़ी बनवाए। केदारनाथ, बद्रीनाथ, वृंदावन, हरिद्वार, उज्जैन, काशी जैसे सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों में भी धर्मशाला निर्माण, मंदिर उद्धार आदि कार्यों में भरपूर सहयोग किया।

अहिल्या– किन्तु यह सब मैंने नहीं किया। मेरे शिव की कृपा से ही संभव हुआ। सब शिवशंकर की ही माया है। अपने राज्य की प्रजा को सुखी रखने का यह दायित्व मेरे शिव ने मुझे सौंपा है। यह राजसत्ता, धन, वैभव इन सब कर मेरा कोई अधिकार नहीं, मैं केवल संरक्षक के नाते इन सबके सदुपयोग हेतु प्रयत्न करती हूँ **इदं राष्ट्राय इदं न मम**.... जो कुछ कर पा रही हूँ सब शिव कृपा से ही हो रहा है जय शिव शंभो... (प्रभु स्मरण करते हुए प्रणाम करती है।)

ब्राह्मण– मातोश्री आपने अनेक मंदिर बनवाए धर्मशालाएँ बनवाईं, कुएँ–बावड़ी बनवाए,

मणिकर्णिका घाट जैसे अनेक जन उपयोगी कार्य करवाए, गरीबों के लिए सदाव्रत आश्रम बनवाए और अनेक स्थानों पर धार्मिक सत्संग और कथाओं का प्रसार किया। महेश्वर को विद्या का केन्द्र बनाया, नारी उत्थान के यत्न किए।

सभी– लोकमाता अहिल्याबाई होळकर की जय।

अहिल्या– (हाथ उठाकर रोकते हुए।) इस प्रकार जयकार उचित नहीं है, मैंने जो कुछ किया प्रजाजन से प्राप्त विधायी लगान से प्रजाजन के हित के लिए किया। यह सब आप सभी के कारण संभव हो पाया है। और ब्राह्मण देव! आप किस कार्य से दरबार में आए हैं कृपया वह बताइए.... यह गुणगान तो समय का अपव्यय ही है।

ब्राह्मण– मातोश्री! मैंने अनेक धर्मग्रंथ पढ़े हैं और काव्यशास्त्र इत्यादि का गहन अध्ययन भी किया है। इसीलिए यह कह सकता हूँ कि जो आपने किया है और अभी भी निरन्तर कर रही हैं वैसा सदियों में किसी शासक ने नहीं किया। अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर मैं यह नवीन ग्रंथ लिखकर आपकी सेवा में लाया हूँ मातोश्री! (पोटली से ग्रंथ निकालकर अहिल्याबाई को देने के लिए उनके निकट जाता है।)

अहिल्या– क्या है इस ग्रंथ में? कोई देवकथा अथवा किसी महान विभूति की गाथा?

ब्राह्मण– (ग्रंथ देते हुए) मालवा की महान विभूति तो आप ही हैं मातोश्री! इस ग्रंथ की नायिका तो आप ही हैं। इस ग्रंथ में आपके चरित्र, पराक्रम और सामाजिक सरोकार से जुड़े जनहितकारी कार्यों का गुणगान ही किया गया है। (यह सुनते ही अहिल्या अपने हाथ पीछे खींच लेती हैं।)

अहिल्या– यह क्या कर रहे हैं आप ब्राह्मण देव! यह तो सरासर अनुचित है, ग्रंथ लिखना था तो शिवस्तुति पर लिखते, व्याकरण अथवा किसी शास्त्र की व्याख्या करते, यह ग्रंथ लिखकर तो आपने अपना समय और श्रम दोनों ही व्यर्थ कर दिए। ब्राह्मण देव! मैंने शिव के समक्ष संकल्प लेकर बाबासा' से वचनबद्ध होकर मालवा का कार्य हाथ में लिया था, केवल और केवल मातृभूमि की रक्षा और प्रजा को सुखमय वातावरण प्रदान करने के लिए अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर रही हूँ मैं..... इसमें गुणगान कैसा... प्रशंसा किस बात की...?

ब्राह्मण– किन्तु मातोश्री.....

अहिल्या– (तनिक क्रोध में) अब कुछ नहीं सुनना है मुझे, अभी तुरन्त जाइए और इस निरर्थक ग्रंथ को नर्मदा मैया में प्रवाहित कर दीजिए।

ब्राह्मण– किन्तु मैंने आत्मीय भाव से.......

अहिल्या– आत्मीय भाव से शिव महिमा का गान करने वाला श्रेष्ठ ग्रंथ लिखिए ब्राह्मण देव!... तभी मेरे पास आइएगा।

(ब्राह्मण अभी भी असमंजस में दिखते हैं।)

अहिल्या– (ऊँचे स्वर में) उठाओ अपना ग्रंथ और जाओ यहाँ से।

(तुकोजी भी उठकर ब्राह्मण को जाने का संकेत करते हैं, वह ब्राह्मण प्रणाम करते हुए जाता है। तभी सेवक आता है।)

सेवक– (झुककर प्रणाम करते हुए।) सरकार! कवि अनंत फंदी आपसे मिलना चाहते हैं।

तुकोजी– अनंत फंदी! यह नाम तो सुना हुआ लगता है (स्मरण करते हुए) हाँ पूना में इनके बड़े चर्चे हैं, बहुत ही अच्छे कवि हैं और मधुर गायक भी, जहाँ भी अपने गीत-कविता सुनाने लगते हैं मंत्रमुग्ध लोगों की भीड़ जमा हो जाती है।

अहिल्या– तब तो हम भी अवश्य ही मिलना चाहेंगे, भेज दीजिए उन्हें।

(सेवक जाता है, अनंत फंदी आते हैं।)

अनंत फंदी– (झुककर प्रणाम करते हुए) जगत प्रसिद्ध लोकप्रिय माता अहिल्याबाई सरकार को सादर प्रणाम करता हूँ।

अहिल्या– आइए कवि महोदय! आपका दरबार में स्वागत है।

अनंद फंदी– सरकार आपकी सेवा में एक गीत प्रस्तुत करना चाहता हूँ, आपकी अनुमति हो तो......।

अहिल्या– हाँ हाँ अवश्य! आपकी बड़ी प्रशंसा की है अभी तुकोजी ने, मैं भी आपका गीत सुनने को आतुर हूँ सुनाइए।

अनंत फंदी– (सस्वर गीत गाते हैं।)

भिर भिर नयन झुकावत चाल चलत गोरी गज भार।
गले मोतन के हार छिमाछिम बिछवन के झंकार।।
काले भँवर तेरे गाल नरम दो गोल हरदल मुखड़ा,
छान छबीली अजब रंगीली मुख में चाबे पान बिड़ा.....

अहिल्या–(हाथ उठाकर रोकते हुए) रुकिए... रुकिए... ये आप क्या गा रहे हैं अनंत जी ?

अनंत फंदी– सरकार! मैं तो शृंगार का प्रिय गीत ही सुना रहा हूँ।

अहिल्या– क्या आपके पास ऐसे ही शृंगार के गीत हैं ?

अनंत फंदी– जी सरकार! मैं तो सदैव ऐसे ही गीत गाता हूँ... सबको बहुत पसंद आते हैं...।

अहिल्या– आते होंगे सबको पसंद... किन्तु मुझे कदापि नहीं सुनना।

अनंत फंदी– मुझसे कोई त्रुटि हो गई हो तो क्षमा कीजिएगा सरकार!

अहिल्या– त्रुटि नहीं आपकी दृष्टि... आपका साधना मार्ग ही उचित नहीं लगता मुझे.... देखिए आप बुद्धिमान हैं, अच्छे कवि हैं, आपका कंठ भी मधुर है... तो इनका उपयोग लोकहित में कीजिए ना... आप इस तरह के उत्तेजक और वासनापूर्ण गीत गाकर अपनी कला और क्षमता को व्यर्थ कर रहे हैं।

अनंद फंदी– क्षमा करें सरकार! मेरा गीत आपको बुरा लगा, किन्तु सरकार लोगों को ऐसे गीत ही अच्छे लगते हैं।

अहिल्या– लोग क्या सोचते हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है, किन्तु एक कलाकार और कवि का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को क्या दे रहा है, यदि आप लोकहित की बात नहीं करते, समाज में सुधार के लिए प्रयत्न नहीं कर सकते तो फिर आपकी लेखनी का कोई उद्देश्य नहीं रह जाता है.... गाना है तो प्रभु भक्ति के भजन गाइए, दिग्भ्रमित लोगों को जीवनमूल्यों का बोध कराने वाली रचनाएँ लिखिए.... तभी आपकी लेखनी और आपका जीवन सार्थक हो सकेगा।

अनंत फंदी– जी मातोश्री! आपने आज मुझे सही दृष्टि दी है, लोगों की तालियाँ और प्रशंसा पाकर मैं कवि धर्म का अपना कर्त्तव्य विस्मृत कर गया था, अब मैं कभी भी इस प्रकार के गीत नहीं लिखूँगा, अब तो ईशभक्ति के भजन और जीवन मूल्य आधारित सकारात्मक रचानाएँ ही गाया करूँगा सरकार... आपका बहुत साधुवाद... लोकमाता कहते हैं... लोकमाता अहिल्याबाई की

सभी– जय। (सभी जयकार करते हैं।)

नाट्यांश – तीन

(कुछ स्त्री–पुरुष चौपाल पर बैठे चर्चा कर रहे हैं।)

एक पुरुष– (दुखी स्वर में) आई साहेब सरकार का दु:ख तो कम ही नहीं होता।

एक स्त्री– एक दु:ख की पीड़ा से उबरने का यत्न करती हैं तभी दूसरी वेदना सामने आ खड़ी होती है।

दूसरा पुरुष– पहले पति सूबेदार खांडेराव वीर गति को प्राप्त हुए... फिर कुछ समय बाद ही बड़े सूबेदार जी का साया भी मालवा से उठ गया...

दूसरी स्त्री– पुत्र मालेराव सरकार से बड़ी आशाएँ थीं मातोश्री को, किन्तु हाय रे दुर्भाग्य! मालवा का राजकाज संभालने में हाथ बँटाने के बजाय दुर्व्यसनों में डूबे रहे और कुछ संभले भी तो कम आयु में ही आईसाहेब को अकेला छोड़कर चले गए।

एक पुरुष– सब कुछ सहकर भी अपना दु:ख–दर्द भीतर ही दबाए रखते हुए आईसाहेब ने बड़े सूबेदारजी

को दिए वचन का पालन करते हुए मालवा को संभाला।

दूसरा पुरुष– केवल संभाला ही नहीं वरन् मालवा को आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से उन्नत और समृद्ध बनाती चली गईं।

एक पुरुष– अपने बुद्धिकौशल का उपयोग करते हुए विरोधियों को भी राज्य के विकास से जोड़ दिया। तेजस्विता और पराक्रम का परिचय देते हुए आक्रमणकारियों के हौंसलों को पस्त भी किया और राज्य का विस्तार भी।

दूसरा पुरुष– उदार, परोपकारी और कल्याणमयी माता की भाँति प्रजाजनों को अपनी संतान की तरह पालन–पोषण करती रही।

एक स्त्री– इसीलिए तो हम सब उनको मातोश्री और लोकमाता कहते हैं ना....

दूसरी स्त्री– किन्तु देखो ना हमारी मातोश्री पर फिर कैसा वज्रपात हो गया है। वीर–कुशल सेनानायक जवांईसा' यशवंतराव फणसे भी संसार त्याग कर चले गए।

एक स्त्री– कितने चाव से लगन किया था अपनी प्रिय पुत्री मुक्ता का....

एक पुरुष– उसमें भी आईसाहेब ने मालवा का हित ही देखा था... शर्त रखी थी ना कि जो कोई भी राज्य को लुटेरों और डकैतों के आतंक से मुक्त करवाएगा उसी के साथ वे अपनी पुत्री का विवाह करेंगी।

दूसरा पुरुष– जवांईसा' यशवंतराव ने इस चुनौती को स्वीकार भी किया और शीघ्र ही पूर्ण भी किया... किन्तु कौन सोच सकता था कि वे भी इतना शीघ्र चले जाएँगे।

एक स्त्री– अब तो आईसाहेब की हालत देखी नहीं जाती... उनका विलाप संताप तो रुक ही नहीं रहा है। नितांत अकेली पड़ गई हैं मातोश्री....।

दूसरी स्त्री– गंभीर बीमारी ने घेर लिया है उनको... जाने अब क्या होगा।

(तभी एक ओर से भजन गाते हुए अनंत फंदी आते हैं।)

अनंत फंदी– (कोई मधुर शिव भजन गाते हुए आते हैं, सभी लोग मग्न होकर सुनने लगते हैं। अनंत फंदी वहीं बैठ जाते हैं, उनके आस–पास बहुत से लोग जमा हो जाते हैं और मन:पूर्वक सुनने और साथ में गाने भी लगते हैं। एक भजन के उपरान्त वे सब मिलकर यह गीत सस्वर गाते हैं।)

युगों युगों तक अमर रहेगी, यशकीर्ति की यह गाथा।
जय शिव जय महेश्वर, जय हो अहिल्या माता।।

अपनों के दु:ख से बढ़कर
कर्त्तव्यपथ का प्रण ठाना।
सर्वस्व त्याग कर भी अपना,
लोकहित ही धर्म माना।।
शिक्षा, संस्कार जगाती सबमें
कर्मयोगिनी हे लोकमाता!

युगों–युगों तक अमर रहेगी, यशकीर्ति की यह गाथा।
जय शिव जय महेश्वर, जय हो अहिल्या माता।।

शिवस्तुति में लीन रहकर,
किया धर्मस्थलों का निर्माण।
सराय, घाट, कुएँ बनवाकर,
जन–जन का किया कल्याण।।
परमार्थ में सार्थक जीवन,
दिव्यचरित्र, अद्भुत गाथा।

युगों–युगों तक अमर रहेगी, यशकीर्ति की यह गाथा।
जय शिव जय महेश्वर, जय हो अहिल्या माता।।

– अजमेर (राजस्थान)

गोपाल का कमाल

गुरुजी की कृपा

– तपेश भौमिक

उन दिनों गोपाल गरीबी का जीवन जी रहा था। राज दरबार की नौकरी भी पक्की नहीं थी। कुछ ही दिन हुए थे कि राज–दरबार में वह आ–जा रहा था। तभी यह बात फैल भी नहीं पाई कि उसके एक सेवादार गुरुजी का धमके। इन गुरुजी महोदय को यह भनक कहीं से न कहीं से लग ही जाती थी कि फलाने शिष्य के यहाँ धन बरस रहा है। वे अपना लोटा–कंबल लेकर वहीं पहुँच जाते। गोपाल के बारे में भी उन्हें यह भनक लग गई कि गोपाल की तो चाँदी है। अब देर किस बात की। वे गोपाल के यहाँ आ धमके। गोपाल ने भक्तिभाव से साष्टांग प्रणाम किया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

गुरुजी ने रुपयों से भरी एक थैली गोपाल को थमाते हुए कहा कि– ''बेटे! मैं तो तीरथ को निकलूँगा। यह रुपयों की थैली अपने पास सम्हाल कर रखना। राह में साथ रखूँगा तो हमेशा चोर डाकू का डर बना रहेगा। मैं और कई शिष्यों के यहाँ से घूमता–फिरता तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़ूँगा।'' गोपाल ने केवल 'यथा आज्ञा' कहकर थैली रख ली।

इसके बाद गुरुजी एक–दो करके दिन–दर–दिन रहने लगे और गोपाल जैसे शिष्यों को सर्वोत्तम बताते रहे। गोपाल भी अपने साध्य के अनुसार गुरुजी की खूब आवभगत करता रहा। कोई दस दिन बीत चुके थे कि अचानक गोपाल को गुरुजी ने बुलाकर कहा कि– ''बेटे मैं तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हूँ। मेरे अनेक धनवान शिष्य भी हैं लेकिन उन्होंने भी तुम जैसी सेवा कभी नहीं की। तुम्हारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। फिर भी अपने गुरु की सेवा में तुमने कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी।''

तब गोपाल ने गुरुदेव के आगे सिर झुकाकर कहा कि– ''आपके आशीर्वाद और सहायता के बिना मैं तो लाचार हूँ। आपकी सेवा आप ही की कृपा से हो पा रही है। मुझ दीन–दुखी की क्या क्षमता कि गुरु–सेवा कर पाऊँ।'' गुरुजी ने भी गोपाल की बातों को

सुनकर गद्गद् होकर कहा– ''गोपाल! मेरी जो रुपयों की थैली है उसे दे दो। मैं तीरथ को नहीं जाऊँगा। अब अपने आश्रम की ओर लौट जाऊँगा।'' गोपाल ने 'जैसी आज्ञा' कहकर रुपयों की थैली लौटा दी।

गुरुजी ने थैली को कुछ हल्का पाकर सिक्कों को गिना तो वहाँ केवल पाँच सौ सिक्के ही थे। गुरुजी एकदम आग–बबूला हो गए। उन्होंने क्रोध में भरकर कहा– ''क्यों गोपाल! मैंने तुम्हें एक हजार सिक्के दिए थे न? पर यहाँ तो केवल पाँच सौ ही हैं। बाकी पाँच सौ कहाँ गए?''

इस पर गोपाल ने अत्यंत विनित भाव से कहा– ''हे गुरुदेव! मैंने तो पहले ही कहा था कि सब आप ही की कृपा से संभव हो पा रहा है। आपके रुपयों का उपयोग आप ही की सेवा में किया है। मुझे तो केवल आपका प्रसाद मिला है।''

गोपाल की बात सुनकर गुरुजी हक्के–बक्के रह गए।

– गुड़ियाहाटी कुचबिहार (पश्चिम बंगाल)

प्रसंग – रवीन्द्र जयंती : ७ मई

वह अभिनय

– निष्णा बनर्जी

बचपन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नाटक खेलने में कम रुचि नहीं थी। वे प्राय: विद्यालय में होने वाले नाटकों में भाग लिया करते थे। परन्तु नायक की भूमिका करने का अवसर उन्हें प्राप्त न हुआ था। एक बार वसन्त ऋतु के उपलक्ष्य में नाटक खेलने की तैयारी हुई। रवीन्द्र की तीव्र इच्छा थी कि वे उसमें मुख्य नायक की भूमिका करें पर किसी ने उनकी ओर ध्यान न दिया। उनकी रुचि देखकर निर्देशक–अध्यापक ने एक छोटी–सी भूमिका उन्हें दी। इससे बालक रवीन्द्र को ठेस–सी लगी। रिहर्सल (पूर्व अभ्यास) के आरम्भ में रवीन्द्र अनमने से अपना अभिनय करने लगे।

अचानक एक घटना घटी। नाटक खेलने के एक दिन पहले नायक बहुत बीमार हो गया। नाटक के लिए कुल बारह घण्टे शेष थे। बड़ी हलचल मची। बारह घण्टे के अन्दर किसी अन्य लड़के के लिए नायक की भूमिका करना संभव न था। अध्यापक महोदय नाटक को बन्द करने का विचार करने लगे। इसी समय बाल रवीन्द्र ने उनसे प्रार्थना की कि नायक की भूमिका उन्हें करने दें, लेकिन अध्यापक न माने। बहुत कहने पर, न जाने क्या सोचते हुए, अध्यापक ने अनुमति दे दी। रवीन्द्रनाथ खिल उठे।

बालक रवीन्द्र ने लगातार आठ घण्टे रात में जागकर नाटक के सारे संवाद पाठ किए और जब नाटक आरम्भ होने के दो घण्टे पूर्व अध्यापक ने पूर्वाभ्यास देखा तो वे दंग रह गए। रवीन्द्रनाथ पहले वाले नायक से बहुत बढ़कर अभिनय कर रहे थे।

नाटक रंगमंच पर खेला गया और इतना सफल रहा कि दर्शकों की तालियों से पाण्डाल गूँज उठा।

– नागपुर (महाराष्ट्र)

वनस्नान

– डॉ. मनोहर भण्डारी

वृक्षों का सान्निध्य रोगहारी और स्वास्थ्यकारी होता है– प्रतिदिन तुलसी, नीम, पीपल, बड़ या अन्य वृक्षों के निकट कम से कम पाँच मिनट तक अवश्य रहें अथवा परिक्रमा करें।

ऐसा करने से रोगकारी एवं तनावकारी रसायनों की मात्रा कम हो जाती है और शरीर में फीलगुड रसायनों की मात्रा में बढ़ोत्तरी हो जाती है।

जापान तथा अमेरिका में वृक्षों के सामीप्य के लिए बड़े–बड़े वनस्नान चिकित्सा केन्द्रों **शिनरिन योकू और फारेस्ट बाथ** का निर्माण किया गया है।

अनिवार्य है, व्यायाम– यजुर्वेद में व्यायाम को औषधि बताया गया है। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार व्यायाम अनिवार्य है। कम से कम आधे घंटे तक पवन मुक्तासन, मंडूकासन, शशकासन आदि योगासन, सूर्य नमस्कार, टहलना, दौड़ना आदि का अभ्यास करें।

स्मरण रहें, मोबाइल की तरह शरीर, प्राण तथा मन को प्रतिदिन चार्ज करना अनिवार्य है। यह कदापि ऐच्छिक नहीं है। व्यायाम करने से शरीर में फीलगुड रसायनों की वर्षा होती है, जिनके कारण प्रसन्नता, दर्द में कमी, शक्ति की अनुभूति होती है। सेन्ट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ, मैन्हेम, जर्मनी की प्रोफेसर **हेइक टोस्ट** और उनके साथियों के अनुसार सीढ़ियाँ चढ़ने उतरने से शारीरिक ही नहीं मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

नए–नए आइडिया के लिए **बिल गेट्स** प्रतिदिन शाम के बर्तन मांझते हैं, यह भी एक अच्छा व्यायाम है। व्यायाम से मस्तिष्क की कार्यक्षमता भी बढ़ती है।

इसलिए बच्चों और विद्यार्थियों को व्यायाम अवश्य करना चाहिए, इससे एकाग्रता, स्मरण शक्ति और सीखने की क्षमता बढ़ती है।

सांस लेने का सही ढंग– व्यक्तिगत आकलन है कि अधिकांश लोग साँस ठीक प्रकार से नहीं लेते हैं। जिसके कारण उनके शरीर में प्राणवायु की कमी बनी रहती है और वे शीघ्र बीमार पड़ जाते हैं।

ऐसे व्यक्ति हमेशा थकान का अनुभव करते हैं। मन अच्छा नहीं रहता।

हमेशा तनाव और क्रोध में रहते हैं। काम करने तथा पढ़ाई में मन नहीं लगता है।

साँस लेते समय पेट बाहर आना चाहिए और साँस छोड़ते समय भीतर जाना चाहिए। ऐसा नहीं हो रहा है तो बार–बार ध्यानपूर्वक साँस लेने का अभ्यास करना चाहिए, यह अत्यधिक आवश्यक है।

विगत कुछ दशकों से श्वसन आधारित चिकित्सा करने वाले अमेरिकन साइकेट्रिस्ट **डॉ. जेम्स गॉर्डोन** के अनुसार गहरी साँस के अभ्यास से कई रोग बिना औषधि के ठीक हो जाते हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

इस तरह बनाओ

चमगादड़

मुर्गा बोला कुकड़ू-कूँ

– नीलम राकेश

अदिति ने एक जोरदार अँगड़ाई ली और आँख मलते हुए कमरे से बाहर आ गई। बाहर आते ही पकौड़ी की गंध ने उसका स्वागत किया। अपनी प्रिय पकौड़ी की गंध से जैसे उसके अंदर चेतना आ गई। वह पलटकर ब्रश करने भागी और तैयार होकर अच्छे बच्चे की तरह माँ को खोजते हुए भोजन कक्ष में आई। माँ के साथ वहाँ पर दादी को बैठा देखकर चौंक गई।

''अरे! नमस्ते दादी! आप कब आईं?'' हाथ जोड़कर अदिति बोली।

''दादी तो सुबह ही आ गई हैं, कब से तुमको पूछ रही हैं।'' उत्तर माँ ने दिया।

''इधर तो आओ मेरे पास।'' प्यार से दादी ने दोनों हाथ फैला दिए।

दौड़कर अदिति दादी की गोद में चढ़ गई।

''अम्मा जी! यह इस लाड़ के लायक नहीं है। बिल्कुल बात नहीं सुनती है। देख रही हो ना, नौ बजे सोकर उठी है।'' माँ ने शिकायत की।

''अरे बहु! मेरी गुडिया अब तुम्हें कोई शिकायत का अवसर नहीं देगी। है ना बेटा?'' दादी ने दुलार से अदिति की ओर देखा।

''हाँ दादी! मैं सुबह जल्दी उठना चाहती हूँ दादी! पर......'' कहते हुए अदिति ने उदास-सा मुँह बना लिया।

''इसे गुड़िया, गुड़िया कहकर आप सबने बिगाड़ दिया है।'' कहकर माँ खाना बनाने चली गईं।

दादी और पोती प्यार से बातें करने लगे। शाम ढली तो कहानी सुनकर अदिति दादी के पास ही सो गई। सुबह-सुबह दादी उसके कान में बोलीं, ''कुकड़ू कूँ भाई कुकड़ू कूँ.... कुकड़ू कूँ भाई कुकड़ू कूँ।''

थोड़ी देर तो अदिति कुनमुनाई। फिर आँख खोलकर दादी को देखा और हँसते हुए उनके गले लग गई।

''देखा! आज तुम्हें जगाने मुर्गे भाई आए थे।'' दादी आँखें नचाकर बोलीं।

दादी के इस अंदाज पर अदिति खिलखिलाकर हँस दी।

''चलो ब्रश करो और मेरे साथ बाहर चलो।'' उसे उठाते हुए दादी बोलीं।

थोड़ी देर में अदिति दादी के साथ लॉन में टहल रही थी और साथ में गुनगुना भी रही थी।

''दादी! ये देखिए, इतनी सुबह–सुबह कितनी सारी तितलियाँ आ गईं।'' एक तितली के पीछे भागते हुए अदिति बोली।

''ये तो रोज तुमसे मिलने आती है। पर तुम नहीं मिलती हो तो दुखी होकर वापस चली जाती है।''

''सच में ?'' आश्चर्य से अदिति ने पूछा।

''और क्या! ये फूल भी तुम्हें प्रतिदिन खोजते हैं।''

''सच्ची दादी ?'' सात वर्षीय अदिति आश्चर्य से कभी दादी को तो कभी फूल को देख रही थी।

''हाँ, सच्ची।'' दादी प्यार से बोली।

''मुझे नहीं पता था। नहीं तो मैं रोज सुबह उनसे मिलने आती।'' फूलों की ओर देखते हुए अदिति बोली।

''कोई बात नहीं। अब तो पता चल गया। अब आज से रोज आना।'' दादी मुस्कुराईं।

''अवश्य दादी! मुझे सच में बहुत अच्छा लग रहा है।''

''तुम्हें पता है अदिति! जो गाना अभी तुम मेरे साथ गा रही थीं, वह प्रार्थना तुम्हारे नए पाठ्यक्रम का प्रथम पाठ है।'' दादी रहस्यमय ढंग से मुस्कुराईं।

अदिति चौंक कर दादी के सामने खड़ी हो गई। ''क्या दादी ?.... सच में ?''

''हाँ, एकदम सच।'' दादी ने सहमति में सिर हिलाया।

''आपको पता है, ये कविता तो मुझे याद हो गई।'' अदिति खुशी से चहकी।

''जानती हूँ।'' दादी फिर से मुस्कुराईं।

''हैं!!.... आप कैसे जानती हैं ?'' आश्चर्य अदिति के चेहरे पर था।

''गुड़िया मेरी! सुबह–सुबह जो भी पढ़ा जाता है वह फटाफट स्मरण हो जाता है।'' दादी ने बताया।

''ये तो बहुत अच्छी बात बताई आपने। अब तो मैं सुबह उठने लगी हूँ। मेरे पास पढ़ने का समय भी रहेगा। आज से मैं सुबह उठकर पढ़ाई करूँगी।'' दृढ़ स्वर में अदिति बोली।

''ये हुई न मेरी पोती जैसी बात।'' कहकर दादी ने अदिति को गोद में उठाकर चूम लिया।

दादी ने वापस जाने से पहले अदिति की घड़ी में अलार्म के स्थान पर मुर्गे की बाँग का संगीत लगा दिया। दादी के जाने के बाद सुबह–सुबह माँ अदिति को जगाने आईं तो उसे पढ़ता हुआ देखकर आश्चर्य चकित रह गईं।

''अरे अदिति! तुम इतनी सुबह–सुबह कैसे जाग गईं ?'' आश्चर्य और प्रसन्नता से माँ ने पूछा।

''मुर्गा बोला 'कुकड़ू–कूँ भाई कुकड़ू–कूँ'।'' हँसते हुए अदिति बोली और फिर से पढ़ने लगी। माँ की प्रसन्नता छुप नहीं रही थी।

– लखनऊ (उ. प्र.)

भूल–भुलैया

च से चम्मच

– चाँद मोहम्मद घोसी

बिना चम्मच अपने हाथ के प्याले की मीठी खीर खाना चन्द्र प्रकाश के लिए टेढ़ी खीर साबित हो रही है। प्रिय बच्चो! आप इसे चम्मच के पास पहुँचा दीजिए ताकि यह चम्मच से स्वादिष्ट खीर खा सके। **– मेड़ता सिटी (राजस्थान)**

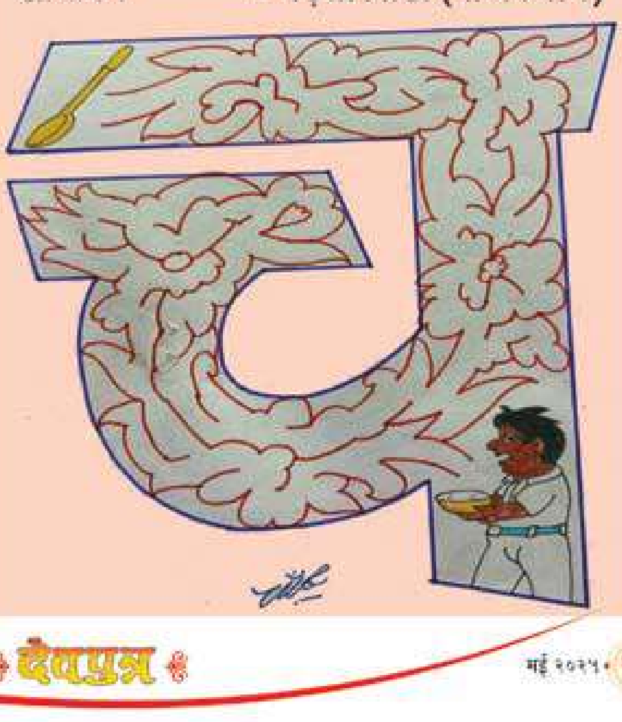

विनोद रस्तोगी : आधुनिक युग के एकांकीकार

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

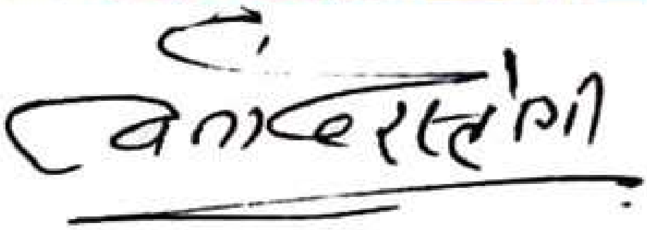

आधुनिक युग के प्रख्यात एकांकीकार विनोद रस्तोगी जी का बाल साहित्य के क्षेत्र में भी प्रचुर योगदान है। उन्होंने बच्चों के लिए उत्कृष्ट एकांकी, कविताएँ और कहानियाँ भी लिखीं। तीनों ही विधाओं में उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

विनोद रस्तोगी जी का जन्म १२ मई, १९२३ देवकीनंदन रस्तोगी की संतान के रूप में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के शम्साबाद में हुआ था। १५ वर्ष की अवस्था में वे लेखन से ऐसे जुड़े कि आजन्म साहित्य उपवन को अपनी रचनाओं के पुष्पों से समृद्ध करते रहे। 'बहू की विदा' उनका ऐसा एकांकी है जो अकेले ही उन्हें साहित्य के शिखर पर स्थापित करने का दम–खम रखता है। नाटक के विविध रूपों के अतिरिक्त कविता, कहानी और उपन्यास विधा में उनकी चार दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उन्होंने दो दशकों तक आकाशवाणी इलाहाबाद में नाट्य निर्देशक के रूप में कार्य किया। फलस्वरूप न केवल उत्कृष्ट नाट्य रचनाओं का सृजन किया अपितु इस क्षेत्र में बहुतों को प्रोत्साहित भी किया। वे नए लेखकों के प्रोत्साहक थे।

विनोद रस्तोगी जी का बाल साहित्य आधुनिक दृष्टि से ओत प्रोत है। उसमें प्रचुर मनोरंजन और शिक्षा एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह विद्यमान हैं। बाल साहित्य की उनकी प्रमुख पुस्तकों में गोलियों का जादू, काया–कल्प, बड़ों का झूठ (बाल नाटक), टीले का चमत्कार, नौनिहालों की कहानियाँ, भारत के लाल, नया जन्म, क्षमा का दण्ड, चमत्कारी मंत्र, भाईचारे की कहानियाँ (बाल कहानी संग्रह) और पिंकी की पूसी, मीठी बोली बोलो, हम भारत के लाल (बालगीत संग्रह) प्रमुख हैं।

अनेक पुरस्कारों से विभूषित रस्तोगी जी को बाल साहित्य सृजन के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने डॉ. राम कुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान प्रदान किया था। रस्तोगी जी २३ फरवरी २००२ को दिवंगत हो गए किन्तु अपनी कालजयी रचनाओं के माध्यम से वे अजर और अमर हैं। उनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

आइए, पढ़ते हैं उनकी एक अनूठी रचना–

बाल एकांकी

बड़ों का झूठ

पात्र

संजू– आयु १३ वर्ष।

दीपा– छोटी बहन, आयु १० वर्ष।

पिताजी– आयु ३७ वर्ष।

माँ– आयु ३५ वर्ष।

मंजू– आयु १० वर्ष (पड़ोस की लड़की)।

शर्मा जी– आयु ४० वर्ष (पिताजी के मित्र)।

स्थान– पिताजी की बैठक।

समय– दिसम्बर के अंतिम सप्ताह की एक दोपहर। (बैठक साधारण है। सामने की दीवार में खिड़की, दाएँ–बाएँ एक–एक द्वार, बायीं ओर का द्वार बाहर जाने के लिए और दायीं ओर का अन्दर जाने के लिए। दरवाजों और खिड़की पर पर्दे लगे हैं। फर्नीचर के नाम पर तख्त, सोफा, मेज और कुछ रेक।)

(पर्दा उठने पर संजू सोफे पर बैठा कोई बाल पत्रिका पढ़ रहा है। उसका चेहरा दर्शकों की ओर है।

दीपा तख्त पर बैठी ड्राईंग बना रही है। संजू अचानक खिलखिलाकर हँस पड़ता है।)

दीपा– हँस क्यों रहे हो, भैया ?

संजू– बड़ा मजेदार चुटकुला छपा है।

दीपा– (उठकर संजू के पास आती हुई) हमें भी सुनाओ भैया !

संजू– ऊँहूँ! अपने–आप पढ़ना। बस थोड़ी देर में देता हूँ।

दीपा– हर बार पहले तुम्ही पढ़ते हो। कभी पहले मुझे भी दे दिया करो।

संजू– मैं तुमसे बड़ा हूँ दीपा ! इसलिए पहले मैं पढ़ता हूँ।

दीपा– यह भी खूब रही। छोटी हूँ तो क्या हर महीने जूठी पत्रिका पढ़ा करूँ ?

संजू– मेरे पढ़ने से पत्रिका जूठी हो जाती है ?

दीपा– हाँ ! मेरी टीचरजी कहती हैं।

संजू– झूठी कहीं की। उस दिन झूठ बोलने पर माँ ने डाँटा था। भूल गई ?

दीपा– और तुम्हें भी तो पिताजी ने डाँटा था। भूल गए ?

संजू– शैतानी करके फूलदान तोड़ दिया और माँ से कहा– ''मैं नहीं जानती।''

दीपा– और तुम पैसे लेकर कॉपी खरीदने गए और चाट खाकर वापस आ गए। पिताजी से कहा पैसे गिर गए हैं।

संजू– माँ समझ गईं, तुम झूठ बोल रही हो।

दीपा– तुम्हारा झूठ भी तो पिताजी ने पकड़ लिया था।

संजू– माँ कहती हैं– ''मुझसे झूठ छिप नहीं सकता ; भगवान ने मुझे वरदान दिया है।''

दीपा– और पिताजी भी कहते हैं– ''मुझसे झूठ छिप नहीं सकता। मेरे पास झूठ पकड़ने वाली मशीन है।''

संजू– दोनों झूठ बोलते हैं। न माँ को भगवान ने वरदान दिया है और न पिताजी के पास मशीन है।

दीपा– हाँ बहुत झूठ। हम तो छोटा झूठ बोलते हैं।

संजू– झूठ चाहे छोटा हो या बड़ा, है तो झूठ ही। मैंने तो हमेशा सच बोलने की शपथ ले रखी है।

दीपा– मैंने भी ! (धीमे स्वर में) किन्तु पिताजी और माँ दोनों ही झूठ बोलते हैं।

संजू– हमें क्या ?

दीपा– पिताजी ने कार्यालय से कैसे छुट्टी ली है, तुम्हें ज्ञात है ?

संजू– हाँ ज्ञात है। बीमारी का बहाना बनाकर।

दीपा– बहाना क्यों बनाया, पता है ?

संजू– हाँ ! वे माँ को बता रहे थे कि लोकसभा का चुनाव होने वाला है। इसलिए ऊपर से आदेश आया है कि किसी को छुट्टी न दी जाए।

दीपा– मैं भी सुन रही थी। पिताजी ने कहा– ''तीन दिन की छुट्टियाँ शेष पड़ी हैं। ऐसे तो मिलेंगी नहीं, बीमारी का बहाना बनाकर ले लूँगा।''

संजू– पता है पिताजी ने मुझसे क्या कहा है ?

दीपा– क्या ?

संजू– यही कि ''यदि कार्यालय का कोई

आदमी पूछने आए तो कह देना पिताजी अस्पताल गए हैं।''

दीपा– वाह! बड़ों का झूठ छिपाने के लिए हम बच्चे झूठ बोलें।

संजू– यही तो कठिनाई है। (बाहर से मंजू आती है।)

दीपा– आओ मंजू बैठो! कहो पढ़ाई कैसी चल रही है?

मंजू– ठीक ही है। मौसी नहीं हैं क्या?

दीपा– अन्दर हैं। (बुलाती है) ''माँ! मंजू आई है।''

माँ– (अंदर से आकर) क्या बात है मंजू?

दीपा– माँ ने मैदा छानने की चलनी मँगाई है।

माँ– हमारी चलनी तो न जाने कब की टूटी पड़ी है। दूसरी अभी मँगाई नहीं। शीला चाची के यहाँ से ले लो।

मंजू– वे तो कोई भी वस्तु देती ही नहीं। कोई न कोई झूठा बहाना बना देती हैं। इसीलिए माँ ने आपके यहाँ भेजा है।

माँ– राम राम! छोटी-छोटी वस्तु के लिए झूठ! हमारे यहाँ तो है नहीं, वरना अवश्य दे देती। हाँ, किसलिए चाहिए मैदा छानने वाली चलनी? कोई मेहमान आने वाला है क्या?

मंजू– जी वो जी माँ ने.....

माँ– कहो-कहो! हम तुम्हारी माँ से थोड़े ही कहने जाएँगे।

मंजू– माँ ने कहा है किसी को बताना नहीं कि शाम को जीजी को देखने वाले आएँगे।

माँ– (हँसकर) वाह! अरे इसमें छिपाने की क्या बात है?

संजू– लेकिन मंजू! तुमने हमारी माँ को तो बता दिया।

मंजू– क्या करें संजू भैया! हमसे झूठ नहीं बोला जाता।

माँ– बोलना भी नहीं चाहिए। अच्छे बच्चे कभी झूठ नहीं बोलते। अब देखो न हमारे संजू-दीपा हमेशा सच बोलते हैं क्योंकि हम उन्हें सच बोलने का केवल उपदेश ही नहीं देते, स्वयं भी सच बोलते हैं।

मंजू– अच्छा मौसी! जाती हूँ। माँ से कह दूँगी चलनी नहीं है। (मंजू जाती है। माँ बाहर वाला दरवाजा बंद कर देती हैं।)

माँ– तुम लोग दरवाजा खोलकर क्यों बैठे थे? अभी पिताजी के कार्यालय का कोई आदमी आ जाता तो....?

दीपा– (वाक्य बीच में ही काटकर) माँ! चलनी तो रसोई में टंगी है।

माँ– टंगी है तो क्या मँगनी में दे देकर सत्यानाश करा लूँ?

संजू– यानी कि आप झूठ बोलीं कि चलनी नहीं है?

माँ– इसे झूठ नहीं कहते संजू बेटा! दुनियादारी कहते हैं। पड़ोसियों की तो आदत ही है माँगने की। अब देखो न दो दिन हो गए शीला चाची

स्टेनलेस स्टील के चार ग्लास माँगकर ले गईं थीं। अभी तक नहीं लौटाए। दीपा, तुम जाओ तो कहना– मेहमान आए हैं, ग्लास दे दीजिए।

दीपा– लेकिन मेहमान कहाँ आए हैं माँ?

माँ– तू बहुत टपर–टपर बोलने लगी है।

संजू– ठीक तो कह रही है। क्या वह शीला चाची से झूठ बोले?

माँ– अपनी चीज माँगने में क्या बुराई? बहाना इसलिए आवश्यक है जिससे उन्हें बुरा न लगे। जाओ, दीपा।

(दीपा अनमने भाव से दरवाजा खोलकर बाहर जाती है। माँ सोफे पर बैठकर बुनाई करने लगती हैं।)

संजू– पिताजी सो रहे हैं क्या?

माँ– नहीं! आँगन में लेटकर उपन्यास पढ़ रहे हैं।

संजू– आज छुट्टी का दूसरा दिन है न?

माँ– हाँ! तीन दिन की छुट्टी ली है, आराम करने के लिए।

संजू– या छुट्टियाँ व्यर्थ न चली जाएँ, इसलिए?

माँ– बात एक ही है।

(बाहर से दीपा खाली हाथ आती है और दरवाजा बन्द कर देती है। तब तक पिताजी आ जाते हैं।)

माँ– ग्लास नहीं लाई?

दीपा– शीला चाची ने कहा– ''ग्लास जूठे पड़े हैं। अभी महरी नहीं आई है। शाम को भेज दूँगी।''

माँ– तुमने कहा नहीं मेहमान आए हैं?

दीपा– कहा तो था।

माँ– फिर भी नहीं दिए? अब कभी आए कोई चीज माँगने।

पिताजी– क्या कहा था तुमने दीपा?

दीपा– (प्रश्न टालती हुई) वही जो माँ ने कहा था।

माँ– (संदेहपूर्ण स्वर में) क्या कहा था? बताती क्यों नहीं?

दीपा– मैंने कहा– ''माँ ने कहा है, मेहमान आए हैं ग्लास दे दीजिए।'' शीला चाची यह सुनकर हँसने लगीं।

पिताजी– देखी अपनी लाड़ो की अक्लमंदी। माँ ने कहा है, मेहमान आए हैं। हुँह, तेरा सिर आए हैं।

माँ– अपनी तरफ से नहीं कह सकती थी?

संजू– (सहसा) आपने ही तो कहा था माँ....

पिताजी– (डाँटकर) तुमसे बीच में बोलने को किसने कहा, संजू? (संजू सहम जाता है।)

दीपा– (भोलेपन से) अपनी तरफ से कहती तो झूठ पकड़ा जाता माँ! मैंने सोचा, कहीं आपकी तरह शीला चाची को भी भगवान ने झूठ पकड़ने का वरदान न दिया हो।

पिताजी– बस! बातें बनवा लो।

माँ– काम करने का रत्ती–भर भी तरीका नहीं। शीला की नजर में मुझे झूठी ठहरा दिया।

(तभी घंटी बजती है। संजू दरवाजा खोलने के लिए उठता है।)

पिताजी– (संजू को संकेत से अपने पास बुलाकर, धीमे स्वर में) मेरी बात याद है न? यदि कोई कार्यालय का आदमी हो तो कहना पिताजी अस्पताल गए हैं।) (पिताजी–माँ शीघ्रता से अंदर जाते हैं। संजू दरवाजा खोलता है। शर्माजी अन्दर आते हैं।)

शर्माजी– कहाँ हैं तुम्हारे पिताजी?

संजू– जी आप?

शर्माजी– (हँसकर) मैं उनका मित्र हूँ।

दीपा– काका! क्या आप पिताजी के कार्यालय में काम करते हैं?

शर्माजी– हाँ! हम दोनों एक ही विभाग में हैं।

दीपा– यदि आप उनके कार्यालय से आये हैं तो.....

संजू– पिताजी ने कहा है, वे घर में नहीं हैं अस्पताल गए हैं।

शर्माजी– (ठहाका मारकर हँसते हैं) वाह! यह भी खूब रही। (सोफे पर बैठते हुए ऊँचे स्वर में) अरे भाई! घबराने की आवश्यकता नहीं। अस्पताल से वापस आ जाओ। मैं शर्मा हूँ।

(पिताजी हँसते हुए आते हैं।)

पिताजी– कहो भाई शर्मा! आज कार्यालय नहीं गए?

शर्माजी– दो दिन की छुट्टी बाकी थी। सो, तुम्हारी तरह मैं भी बीमार पड़ गया। छुट्टी बेकार करने से क्या लाभ?

पिताजी– मेरा स्वास्थ्य सचमुच खराब है।

शर्माजी– (बीच में ही) हमसे न उड़ो। लेकिन एक बात है, तुम बच्चों को झूठ बोलने की सही ट्रेनिंग नहीं दे पाए। तुम्हारा बेटा कहने लगा– पिताजी ने कहा है वे घर में नहीं है, अस्पताल गए हैं। भाई वाह! इस वर्ष का एवन जोक।

पिताजी– नहीं ऐसी बात नहीं है। (बच्चों से) तुम दोनों अंदर जाओ। माँ से कहना चाय–वाय....

शर्माजी– नहीं यार! चाय पीकर आया हूँ। अब चलता हूँ। जरा खन्ना और वर्मा के भी हाल–चाल ले लूँ।

पिताजी– क्यों! क्या वे भी?

शर्माजी– अरे भाई! कौन गधा अपनी छुट्टियाँ बेकार करेगा। सो, हर होशियार आदमी बीमार पड़ गया है। (शर्माजी और पिताजी ठहाका मारकर हँसते हैं।)

पिताजी– क्या करें भाई! हमें झूठ बोलने में आनंद तो आता नहीं। सरकार झूठ बोलने के लिए मजबूर करती है, तो बोलते हैं।

शर्माजी– (उठकर) अच्छा अब चलता हूँ। (संजू के सिर पर हाथ रखकर) बेटा! तुम्हारी बात सोच–सोचकर खूब हँसूँगा। (पिताजी से) यार! अभी तुम्हारे बच्चे झूठ बोलने में कच्चे हैं। हमारे बच्चे तो इतने चतुर हैं कि कभी–कभी हमारे भी कान काट लेते हैं। (शर्माजी हँसते हुए जाते हैं। पिताजी दरवाजा बंद करते हैं।)

पिताजी– (डाँटकर) बुद्धू कहीं का, मेरी नौकरी लेकर ही दम लेगा क्या?

संजू– (सहमकर) मैंने क्या किया पिताजी?

पिताजी– पिताजी का बच्चा! (कान पकड़कर) और क्या करेगा। तू शर्मा से सीधे से नहीं कह सकता था कि पिताजी अस्पताल गए हैं। (माँ तेजी से अन्दर आती हैं।)

माँ– क्या हुआ? क्यों डाँट रहे हो?

पिताजी– कार्यालय का शर्मा आया था। साहब बोले– ''पिताजी ने कहा है वे घर में नहीं हैं, अस्पताल गए हैं।'' वह तो खैर हुई कि शर्मा ने भी मेरी तरह झूठी 'सिक लीव' ले रखी है। यदि कहीं बड़े साहब का अर्दली पूछने आया होता तो नौकरी....

माँ– (बीच में ही) तुम दोनों को कब बुद्धि

आएगी ? इतने छोटे तो हो नहीं कि जरा–सी बात भी न समझो! बेटी ने माँ को झूठा ठहरा दिया और बेटे ने पिता को।

पिताजी– सारी पढ़ाई–लिखाई बेकार! बुद्धि के नाम पर शून्य। (संजू और दीपा एक–दूसरे की ओर देखकर आँखों ही आँखों में कुछ निश्चय करते हैं।)

संजू– पिताजी! आपने कहा था– ''अच्छे बच्चे झूठ नहीं बोलते।''

दीपा– और माँ आपने कहा था– ''हमेशा सच बोलना चाहिए।''

संजू– आपकी बात मानकर हमने सच बोलने की शपथ ले ली है।

दीपा– हम अच्छे बच्चे बनने का प्रयत्न कर रहे हैं।

संजू– (गला भर आता है।) हमेशा सच बोलने की शिक्षा देकर आपने हमें जो अमूल्य उपहार दिया था.....

दीपा– उसे वापस न लीजिए, कृपया हमसे झूठ न बुलवाइए। (पिताजी और माँ एक–दूसरे की ओर देखते हैं। वे कुछ बोल ही नहीं पाते।)

संजू–पिताजी! आपने झूठ बोलकर कार्यालय से छुट्टी ली तो मुझे बहुत दु:ख हुआ।

दीपा– और माँ! आपने मंजू से चलनी के बारे में झूठ बोला, तो मुझे भी बहुत बुरा लगा।

संजू– अब हम अपना दु:ख किससे कहें ?

दीपा– हमें बताइए, हम क्या करें? हमारी समझ में कुछ नहीं आता।

संजू– माँ! आप शीला चाची के साथ सिनेमा देखने जाती हैं और हमसे कह जाती हैं पिताजी पूछें तो कह देना बाजार गई है। बोलिए पिताजी, ऐसे में हम आपसे क्या कहें ?

दीपा– छोटे–छोटे झूठ बोलने पर तो आप डाँटते हैं पिताजी! तो फिर क्या आप चाहते हैं कि हम बड़ा–बड़ा झूठ बोला करें।

संजू– डरते–डरते आज मन की बात हमें कहनी ही पड़ी है, माँ। (माँ–पिताजी अदालत में गुनहगार की तरह खड़े हैं।)

संजू– मैं शर्मा काका से झूठ नहीं बोला....

दीपा– और मैं शीला चाची से झूठ नहीं बोली..

संजू– यदि आप समझते हैं, हमने गलती की है तो हमें डाँटिए मारिए।

दीपा– जो चाहे दण्ड दीजिए।

संजू– (फूट पड़ता है) हम भटक रहे हैं पिताजी! हमें राह दिखाइए।

पिताजी– (कंठ भरा है।) हम स्वयं भटके हुए थे बेटा! राह तो तुम दोनों ने हमें दिखाई है।

माँ– हम नहीं जानते थे कि तुम लोग झूठ–सच की बात को लेकर इतना परेशान हो।

पिताजी– बेटा! हम तो तुम्हें कुछ विशेष दे न सकें किन्तु तुम दोनों ने अवश्य आज हमें बहुत बड़ी सीख दे दी है।

माँ– तुम दोनों को तो सच बोलने का उपदेश देते रहे और स्वयं हम झूठ बोलते रहे।

पिताजी– और अपने स्वार्थ के लिए तुम दोनों से भी झूठ बुलवाना चाहा। सचमुच कितनी बड़ी भूल करते रहे तुम्हारे माँ–पिताजी।

माँ– अब हम कभी झूठ नहीं बोलेंगे।

पिताजी– हम बड़ों के झूठ ने तुम्हारे नन्हें मन को दुखाया, इसके लिए हम बहुत दु:खी हैं।

माँ– (अवरुद्ध कंठ से) अब तुम्हें कभी शिकायत का अवसर नहीं मिलेगा।

माँ पिताजी– हमें क्षमा कर दो बच्चो।

(संजू 'पिताजी' कहकर उनके सीने से लग जाता है। माँ दीपा को कलेजे से लगा लेती हैं। धीरे–धीरे पर्दा गिरता है।)

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

सपना और शीतल

– डॉ. प्रभा पंत

बहुत पहले की बात है, एक गाँव में एक किसान अपने बूढ़े माता–पिता के साथ रहता था। उस किसान की पत्नी भी उसी की तरह बहुत परिश्रमी और दयालु थी। दोनों मिलकर अपने छोटे–से खेत में सब्जियाँ उगाया करते थे, और उसे बेचकर अपने घर–परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करते थे।

उनकी दो बेटियाँ थीं। बड़ी बेटी का नाम शीतल और छोटी का नाम सपना था। उनके गाँव के निकट ही एक प्राथमिक विद्यालय था। दोनों बहनें प्रतिदिन विद्यालय जाती थीं और कक्षा में खूब मन लगाकर पढ़ती थीं।

सपना को खेलकूद में भाग लेना बहुत पसन्द था और शीतल को पढ़ाई–लिखाई के अलावा दादा–दादी की सेवा करना तथा माता–पिता के साथ खेत में काम करना बहुत अच्छा लगता था। दोनों बहिनें बहुत प्यार से रहती थीं। एक–दूसरे की सहायता करने को सदा तैयार रहती थीं। तथा साथ बैठकर प्रतिदिन अपना गृहकार्य भी करती थीं।

गृहकार्य पूरा करके, शीतल खेत में चली जाती और सपना आस–पास के बच्चों के साथ खेलने चली जाती थी। सपना इतनी अच्छी खिलाड़ी थी कि वह जिस टोली में होती जीत उसी टोली की हुआ करती थी ; इसलिए सभी बच्चे उसे अपनी–अपनी टोली में लेना चाहते थे। यह देखकर सपना को बहुत अच्छा लगता था और वह अपनी टीम को जिताने के लिए जी–तोड़ मेहनत करती थी।

उनके विद्यालय में प्रतिदिन प्रार्थना के बाद प्रधान अध्यापिका किसी भी बच्चे से उनका कोई–न–कोई अनुभव साझा करने को कहती थीं ताकि बच्चे अपने मन की बात कहना सीख सकें। उनमें सोचने–विचार करने की प्रवृत्ति तथा आत्मविश्वास जाग्रत हो।

सप्ताह में एक दिन वह बच्चों को किसी–न–किसी महापुरुष के जीवन का कोई प्रेरक प्रसंग सुनाया करती थीं।

एक दिन उन्होंने ईश्वरचंद्र विद्यासागर के जीवन का एक प्रसंग सुनाते हुए कहा– ''बच्चो! ईश्वरचंद्र विद्यासागर बाल्यकाल से ही अत्यंत परिश्रमी, लगनशील और सत्यनिष्ठ थे। वह अपने विद्यार्थी जीवन में भी दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते थे। अपनी बुद्धिमत्ता एवं परिश्रम–शीलता के कारण पढ़ाई करते–करते ही उन्हें पसाच रुपए की नौकरी मिल गई।

उन दिनों पचास रुपए का मूल्य आज के एक लाख के बराबर था। जब उनके रिश्तेदारों को यह बात पता चली तो वह लोग उनके घर बधाई देने आए। एक रिश्तेदार ने उन्हें बधाई देते हुए कहा– ''ईश्वर की कृपा से तुम्हारे सारे कष्ट और घर–परिवार की निर्धनता दूर हो गई। अब तुम चैन की बंसी बजाओ।''

वह बोले– ''काका! आप मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं या अभिशाप? जिस परिश्रम के बल पर मैंने यह नौकरी प्राप्त की, जिससे हमारी निर्धनता और कष्ट दूर हुए आप उसे त्यागकर मुझे अकर्मण्य होने की सलाह दे रहे हैं। आपने तो कहना चाहिए था, बाल्यकाल से तुमने जिस निर्धनता, अभाव और कष्ट को अनुभव किया है, उसे भुलाना मत, इसी तरह परिश्रम करते हुए और आगे बढ़ते रहना औरों की सहायता करना... हताश–निराश

लोगों का मार्गदर्शन करना ताकि वह भी तुम्हारी तरह बन सकें।''

अंत में उन्होंने कहा– ''बच्चो! हमेशा स्मरण रखना, यदि तुम केवल स्वयं तक या अपने घर–परिवार तक ही सिमटकर रह जाओगे, केवल अपने और उनके लाभ और हानि के विषय में सोचकर ही कार्य करोगे तो अनजाने में तुम औरों के प्रति अन्याय और अत्याचार भी कर सकते हो। इसलिए कोई भी कार्य करने से पहले एक बार यह विचार अवश्य करना कि इससे किसी दूसरे को हानि या किसी का अहित तो नहीं होगा।''

उस दिन विद्यालय से लौटकर, शाम को अपना गृहकार्य पूरा करने के बाद जब शीतल अपनी नन्हीं–सी कुदाली उठाकर खेत की ओर जाने लगी तो सपना भी उसके पीछे–पीछे खेत की ओर चल दी।

''आज तू खेलने क्यों नहीं गई?'' शीतल ने उससे पूछा।

सपना बोली– ''मुझे भी ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसा बनना है। इसलिए आज से मैं भी परिश्रम से खेत में काम करूँगी, और माँ–पिताजी की सहायता करूँगी।''

शीतल के साथ सपना को खेत में आते देखकर माता–पिता ने आश्चर्य से अपनी नटखट–सी बिटिया के आने का कारण पूछा, तो शीतल ने उन्हें ईश्वरचंद्र

विद्यासागर के जीवन की वह पूरी कहानी सुना दी। जिससे प्रेरित होकर सपना माता–पिता की सहायता करने खेत में आई थी।

किसान ने अपनी बेटी को समझाते हुए कहा– ''बेटा! तुम खेत के काम किए बिना भी हमारी सहायता कर सकती हो।''

''कैसे?'' सपना ने उत्सुक होकर पूछा।

''यदि तुम मन लगाकर पढ़ोगी समय से सोकर उठोगी, अपने सब काम स्वयं करोगी, दादा–दादी का कहना मानोगी, घर से इधर–उधर बिखरे सामान को समेटकर रखोगी और खेल–कूद में भाग लेकर अपने विद्यालय के लिए पुरस्कार जीतकर लाओगी तो वह भी हमारी सहायता करना ही होगा।''

यह सुनकर सपना की उत्सुकता और भी अधिक बढ़ गई। उसने प्रश्न किया– ''कैसे?''

माँ ने मुस्कुराकर अपनी बिटिया को गोद में बिठाया और उसका सिर सहलाते हुए बोली– ''जब तुम यह सब करने लगोगी, तो तुम्हें देखकर आस–पड़ोस के बच्चे भी तुम्हारी तरह अपने काम करना, घर के कामों में माँ–पिता, दीदी–भैया, दादा–दादी का हाथ बँटाना सीख जाएँगें। सब हमारी बिटिया की प्रशंसा करेंगे, तो हमें आनंद होगा... आया समझ?''

सपना ने मुस्कुराकर हामी भरते हुए अपनी गर्दन हिला दी। और पिताजी के पास जाकर पौधों के आस–पास उगी घास उखाड़ने लगी। उस दिन से वह भी अपनी दीदी की तरह पढ़ाई के साथ–साथ घर के छोटे–छोटे काम करके, माँ की सहायता करने लगी।

विद्यालय में जब भी कोई प्रतियोगिता होती तो दोनों बहिनें अपनी–अपनी पसन्द की प्रतियोगिता में अवश्य भाग लेती थीं। अपने परिश्रम तथा अभ्यास से वह हमेशा सबसे आगे रहने का प्रयास करने लगीं। यदि कभी दूसरे स्थान पर रह जाती थीं तो अगली बार और अधिक परिश्रम करके पहला स्थान प्राप्त कर ही लेती थी।

– हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

जीना है तो हँसना सीखो

– डॉ. बी. आर. नलवाया

कई शारीरिक और मानसिक रोगों के उपचार के लिए हँसी एक वैकल्पिक औषधि के रूप में स्थापित होती जा रही है। इसलिए प्रतिदिन सुबह खुलकर ठहाके लगाते रहो और रोगों को दूर भगाते रहो। इस बात के पर्याप्त वैज्ञानिक आधार भी हैं कि ठहाके लगाकर हँसने से कई बीमारियों का स्वत: उपचार हो जाता है।

हँसने से शारीरिक व्यवस्था पर काफी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। प्रो. डॉ. नार्मन का कहना है- हँसना एक उत्तम व्यायाम है। प्रतिदिन चार-पाँच किलोमीटर दौड़ने से जो व्यायाम होता है और उससे जो शारीरिक क्षमता बढ़ती है, उतना ही हँसने से बढ़ती है। हँसने पर शरीर में सदैव प्रसन्नचित्त रहने से मनुष्य का पाचन संस्थान तीव्र होता है। रक्ताणु वृद्धि प्राप्त करते हैं। स्नायु संस्थान ताजा होता है और स्वास्थ्य स्वच्छ रहता है। अपने स्वास्थ्य के लिए फिल्म अभिनेता, जज, डॉक्टर और वरिष्ठ नागरिक एवं नौकरशाह ठहाके लगाकर हँसते रहते हैं।

पिछले २३ वर्ष पूर्व हास्य योग की शुरूआत सबसे पहले मुंबई में डॉ. मदन कटारिया ने की थी। इसे मई माह के पहले रविवार को मनाया जाता है। आज दुनियाभर में लगभग १२० देशों में हास्य योग के १०८९ से अधिक पंजीकृत क्लब हैं।

गहरी साँस लेना, शरीर को खींचने के साथ-साथ हँसी का मेल हास्य योग में सिखाया जाता है। हास्य योग का मूल विचार यह है कि शरीर कृत्रिम और असली हँसी में अन्तर नहीं कर सकता।

हँसी की एक पुड़िया सौ औषधियों के बराबर होती है। यही कारण है कि इसको योग का स्थान मिल चुका है। योग के दूसरे तरीकों से अलग इसको मनुष्य को प्रसन्न रहना और जी खोलकर हँसना सिखाया जाता है। तभी तो हँसी को प्रकृति का सबसे बड़ा उपहार कहा जाता है।

हँसी को औषधि के रूप में मानने वाले श्री. नानिक रूपानी ने कहा कि पहले लोग हमें पागल समझते थे किन्तु आज पूरी दुनिया के लोग इस बारे में जानकारी माँग रहे हैं। इसके आधार पर मुंबई के कई क्षेत्रों में लॉफ्टर क्लब धड़ल्ले से खुल गए। आज यह स्थिति है कि देश के हर कौने में कोई न कोई लॉफ्टर क्लब प्रतिदिन खुल रहा है।

हँसी बाँटने से बढ़ती है। ठहाकों के बदले ठहाके ही लौटकर आते हैं इसलिए हँसते रहें हँसाते रहें। अपने वातावरण में, परिवार में, अपने सगे-संबंधियों में प्रसन्न रहने के अवसर ढूँढ़ते रहें। इससे स्वास्थ्य ही नहीं संबंध भी मजबूत बनेंगे।

हँसने-हँसाने का सबसे सार्थक पहलू ही यह है कि यह एक डोर की तरह हमारे दिलों के जुड़ाव को बनाए रखता है। अपने ही नहीं परायों को भी निकट लाता है कहते भी हैं कि मुस्कुराहटें एक डोर-सी होती है। जब ऐसी जुड़ाव भरी जिंदादिल सोच के साथ जाने-अनजाने लोगों के साथ ठहाके हो जाएँ तो जीवन प्रत्येक मोड़ पर अच्छा ही बनेगा। तभी तो मनोवैज्ञानिक भी तनाव और अवसाद से जुझ रहे लोगों को हँसते-हँसाते रहने की सलाह देते हैं। अच्छी बात यह भी है कि हँसी हमें क्रोध और नेगेटिविटी से दूर रखती है।

हँसना-मुस्कुराना प्रकृति का अनमोल उपहार और मनुष्य व्यवहार का सबसे पॉजीटिव इमोशन है। प्रकृति का यह अनमोल उपहार स्वास्थ्य के लिए संजीवनी है। इसलिए ईश्वर ने केवल मनुष्यों को इस सौगात से नवाजा है। आवश्यकता है इस अनमोल उपहार का मोल समझें और हँसी को खोने ना दे।

हँसने-हँसाने का सबसे सुखद पहलू यही है

कि यह हर परिस्थिति में जीवन को नया रंग, नया उत्साह देता है। हँसी बाँटने का भाव खुशियों को और विस्तार देता है। हँसने से चेहरा ही नहीं मन भी खिल उठता है। निराशा और पीड़ा के साये दूर होते हैं। हँसना मनुष्य की निर्णय लेने की क्षमता और मस्तिष्क के स्वास्थ्य को भी अच्छा रखता है। वाकई हँसी स्वास्थ्य के लिए टॉनिक का भी काम करती है।

स्व. राजू श्रीवास्तव ने कहा था कि– ''खुशियों का रास्ता है हँसी।'' शैलेष लोढा टी. वी. कलाकार ने बताया– ''बिना हँसी–खुशी के जीवन संभव ही नहीं।'' ऐसे कई महापुरुष जिसमें लॉरेंस स्टर्न–आयरिन कथाकार, रॉबर्ट फ्रास्ट–अमेरिकी लेखक, क्रिस जैसी–अमेरिकी लेखिका, जॉर्ज क्रिस्टोक लिचन बर्ग–भौतिकी विद्वान, लुडविन विंटग्रेस्टाइन–आस्ट्रियन चिंतक, जैक डी–अँग्रेज कामेडियन, फैंकमुई–अँग्रेज कामेडियन आदि के उद्बोधन विचारों से यही निष्कर्ष निकलता है कि एक हँसी जीवन की क्यारियों में सौ फूल खिलाती है।

मैंने यह देखा कि महात्मा गाँधी, तिलक, दयानंद, विवेकानंद आदि महापुरुषों के जीवन का अध्ययन करने पर यह पाया कि वे कितने विनोदप्रिय स्वभाव के साथ उन्होंने संघर्षमय, कर्त्तव्य प्रदान, कठोर जीवन की सफलता के मंत्र उनके हँसते रहने तथा मुस्कुराहट भरे जीवनदर्शन में छिपा था। महात्मा गाँधी के अनुसार हँसी मन की गाँठें बड़ी सरलता से खोल देती है। मेरे मन ही नहीं, तुम्हारे मन की भी।

जो जी से हँसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसो, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ तुम से कम घृणा करेगा। एक अनजाने को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ उसका दुःख घटेगा। एक निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी। एक बूढ़े को हँसाओ वह अपने को जीवन समझने लगेगा। एक बालक को हँसाओ, उसका अच्छा

स्वभाव, अच्छा स्वास्थ्य होगा। वह प्रसन्न और प्यारा बालक बनेगा।

एक अँग्रेजी डॉक्टर कहता है– ''किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस ऊँट ले जाने से एक हँसोड़े व्यक्ति को ले जाना अधिक लाभकारी है।'' एक रोगी की ही नहीं, सबके लिए हँसी बहुत काम की वस्तु है। वह एक साथ ही शरीर और मन को प्रसन्न करती है। पाचन–शक्ति बढ़ाती है। रक्त को चलाती है। हँसी एक शक्तिशाली औषधि है।

धन्य हैं वे जो दूसरों को हँसाते हैं। उनकी बातों से शरीर में रक्त आनंदित होकर नाच उठता है। हँसी चिंताओं को उड़ाती और कष्टों को झेलने में सहायता करती है। इसलिए जीना है तो हँसना सीखो जीवन में हँसी से बढ़कर और कुछ भी नहीं है।

– मन्दसौर (म. प्र.)

चले हवा की चाल : आरव भारद्वाज

– रजनीकांत शुक्ल

आरव भारद्वाज का जन्म मुंबई में हुआ। वे मूल रूप से हरियाणा राज्य के रोहतक शहर से हैं। किन्तु इन दिनों वे देश की राजधानी दिल्ली में परिवार के साथ रहकर अपनी पढ़ाई पूरी कर रहे हैं। बचपन से ही उनके दादाजी उन्हें देश के शहीदों, महापुरुषों की वीरता की कहानियाँ सुनाया करते थे।

ऐसे में जब वर्ष २०२२ में भारत सरकार ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की १२५वीं जयंती मनाए जाने का निर्णय लिया तो आरव ने भी कुछ बड़ा करने का संकल्प अपने दादाजी के सामने ले लिया।

उन्होंने तय किया कि वे भारत के मणिपुर राज्य के मोइरंग में जाएँगे, जहाँ पर नेताजी की आजाद हिन्द फौज ने अँग्रेजों को हराया और उनके कर्नल, शौकत मलिक ने १४ अप्रैल १९४४ को वहाँ आईएनए का झंडा फहराया था।

आरव की माँ डॉ. स्वाति तो इसके पक्ष में बिलकुल भी नहीं थी। उनकी दृष्टि में यह कहने में तो बहुत सरल लगता है। किन्तु मात्र दस वर्ष के बच्चे को देखते हुए यह असंभव जैसा लक्ष्य था। लगभग ढाई हजार किलोमीटर का एक महीने से भी अधिक की लगातार यात्रा नन्हीं–सी जान कैसे पूरा करेगी।

आरव के पिता ने उन्हें समझाया और कहा– आरव की आयु में ही सचिन तेंदुलकर ने क्रिकेट खेलना प्रारम्भ किया था। यदि उनके घर के लोगों ने बच्चा समझकर उन्हें मैदान में खेलने न जाने दिया होता तो शायद इतने बड़े क्रिकेट खिलाड़ी से संसार वंचित रह जाता।

अन्त में घर में सभी लोगों ने एक साथ मिलकर आरव के सपने को पूरा करने में अपना योगदान देने का मन बना लिया। आरव के पिता अतुल भारद्वाज मैक्स हस्पताल में स्पाइन सर्जन हैं। उन्होंने आरव के साथ–साथ साइकिल यात्रा करने का तय किया वहीं उनके दादाजी और उनके भाई आरव के छोटे दादाजी ने कार में सामान लेकर इस यात्रा में उनके साथ चलने के लिए कमर कस ली।

इस प्रकार आरव ने १४ अप्रैल २०२२ को आईएनए मेमोरियल मणिपुर से राष्ट्रीय युद्ध स्मारक नई दिल्ली तक २६१२ किलोमीटर की साइकिल से जागरूकता यात्रा निकालने की अनूठी योजना बनाई क्योंकि आरव जब साढ़े तीन वर्ष के थे तब उनके दादाजी ने उन्हें एक साइकिल लाकर दी थी जिसे वह बचपन से ही खूब चलाते थे।

इधर १० वर्ष के कक्षा ६ में पढ़ने वाले आरव भारद्वाज ने इस कठिन संकल्प को पूरा करने के लिए एक ओर अपने पिताजी के साथ मिलकर प्रतिदिन सुबह उठकर साइकिल चलाने का अभ्यास करना प्रारम्भ कर दिया वहीं उनके दादाजी भी आरव की इस ऐतिहासिक यात्रा को सफल बनाने की तैयारियों में जुट गए।

ठीक १४ अप्रैल २०२२ को मणिपुर के मुख्यमंत्री ने आजादी के अमृतकाल में की जाने वाली आरव की इस जन जागरूकता यात्रा के लिए वहाँ से हरी झंडी दिखाई। आरव ने एक महीने तक प्रति दिन औसतन सौ किलोमीटर की साइकिल यात्रा की। इस बीच उन्होंने रास्ते में पड़ने वाले स्वतंत्रता के नायकों के स्मारकों पर श्रद्धांजलि अर्पित की। जिनमें रेड हिल, नागा युद्ध स्मारक, चम्पारण, चौराचौरी, गुमनामी बाबा की समाधि, काकोरी, शाहजहाँपुर, मेरठ जैसे भारत के स्वाधीनता संग्राम से जुड़े स्थान थे।

देश के आठ राज्यों मणिपुर, नागालैंड, असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, हरियाणा और दिल्ली की इस बत्तीस दिनों की यात्रा में आरव ने कई स्थानों पर विद्यालयों में रुककर अपने बाल साथियों

को आजादी के महान नायकों के बलिदानों और अपनी यात्रा के उद्देश्य के बारे में बताया।

मार्ग में जिसे भी, आरव के इस उद्देश्य और संकल्प को साकार करती हुई यात्रा के बारे में पता चलता वे सब आरव की जी भरकर सराहना करते। यद्यपि मार्ग में कहीं मूसलधार वर्षा और कहीं चिलचिलाती धूप और बढ़ते तापमान का उन्हें सामना करना पड़ा किन्तु उत्साह और उमंग में भरे आरव ने इनकी चिंता नहीं की। उनके अदम्य उत्साह के सामने यह यात्रा बिना किसी बाधा के चलती रही।

१५ मई २०२२ को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक नई दिल्ली में इंडिया गेट के निकट उनकी यात्रा का समापन हुआ। विश्व साइकिल दिवस तीन जून के अवसर पर मेजर ध्यानचंद स्टेडियम नई दिल्ली में आरव की इस साइकिल जागरूकता यात्रा के लिए केन्द्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर के साथ–साथ किरण रिजिजु, डॉ. हर्षवर्द्धन, रामवीर विदूड़ी और मनोज तिवारी ने उनकी सराहना की।

इस सफल यात्रा से उत्साहित होकर आरव ने दो वर्ष के बाद २६ जुलाई २०२४ को कारगिल विजय दिवस की २५वीं जयंती पर कारगिल युद्ध स्मारक लद्दाख से राष्ट्रीय युद्ध स्मारक नई दिल्ली तक १२५१ किलोमीटर की साइकिल जागरूकता यात्रा निकालने का निश्चय किया। इसका उद्देश्य देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले रणबांकुरे शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करना था।

ऐसा निश्चय कर वे पहाड़ी यात्रा पर साइकिल चलाने का अभ्यास करने में जुट गए। किन्तु वे इस यात्रा के समय पहले दिन ही कठिनाई में आ गए जब उन्हें जोजीला दर्रे की कठिन चढ़ाई चढ़नी पड़ी, जहाँ के ऊँचे, ऊबढ़–खाबड़ बिना रेलिंग के ऑक्सीजन की कमी वाले पतले पहाड़ी मार्गों पर उन्हें साइकिल चलानी पड़ी।

जिससे एक बारगी तो बारह वर्ष के इस साहसी

बच्चे के तन की हिम्मत कमजोर पड़ने लगी। किन्तु जब मार्ग में फौजियों को ऐसी कठिन परिस्थितियों में देश की रक्षा के लिए प्रसन्नता से तैनात देखा। अपने जयहिन्द के उत्तर में उनको कड़क 'जयहिन्द' का नारा लगाते देखा तो उनके साहस से प्रेरणा लेकर अपने मन के इरादे को और मजबूत करके आगे वह बढ़ता रहा।

इस रास्ते में आरव देश के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाले कारगिल नायकों के परिवारों से मिले, अटारी सीमा जलियांवाला बाग और शहीद भगतसिंह के गांव खटकल कलां भी गए।

इस यात्रा के समय द्रास कारगिल, सोनमर्ग, श्रीनगर, बनिहाल, उधमपुर, जम्मू, दीनानगर, गुरदासपुर, अटारी सीमा से होते हुए जलियांवाला बाग, जालंधर, चंडीगढ करनाल, रोहतक होते हुए वे दिल्ली राष्ट्रीय युद्ध स्मारक तक आए।

पिता और पुत्र की इस जोड़ी द्वारा देश की अखंडता और देशप्रेम के लिए की गई इन सबसे लम्बी साइकिल यात्राओं के लिए एशिया बुक ऑफ रिकार्ड में स्थान दिया गया। तीन पीढ़ियों के द्वारा मिलकर की गई यह देश भक्ति की जागरूकता यात्रा अनूठी थी।

आरव की पहली साइकिल जागरूकता यात्रा पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म इंस्पिरेशन ऑफ फायर (ए मोटीवेशनल जर्नी ऑफ बाइसिकल ब्वाय ऑफ इंडिया आरव भारद्वाज) २३ जनवरी २०२३ नेताजी के १२६वें जन्मदिन पर दिल्ली में जारी की गई। जिसे विदर्भ फिल्म महोत्सव में पुरस्कृत किया गया।

इतनी कम आयु में देश के एक बड़े भू-भाग पर जागरूकता के लिए की गई समाज सेवा के लिए आरव का नाम प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। २६ दिसम्बर २०२४ को वीर बाल दिवस के अवसर पर देश की राष्ट्रपति ने आरव को यह पुरस्कार राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित कर प्रदान किया।

नन्हे मित्रो!

मन में यदि लगन हो तो हम, कुछ भी कर सकते हैं।
अपने संकट, दुखी जनों की पीड़ा हर सकते हैं।
सोच अगर लें, लगे रहें, जो भी मन में हम ठाने,
रोते चेहरों पर खुशियाँ, मुस्काने धर सकते हैं।

– नई दिल्ली

लघुकथा

विनम्रता

– मीरा जैन

भोर की मनोहारी बेला में फल, फूल और पत्तियाँ सभी परस्पर वार्तालाप के समय अपने-अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। अंत में तीनों एक ही विषय पर आकर एक मत हो गए कि-

''यह तना नहीं होता तो हम सब नहीं होते।'' तने की इस परोपकारिता के लिए सभी ने मिलकर तने को धन्यवाद देने की सोची और उसकी ओर मुख कर बोले- ''तने राजा! वास्तव में आप बहुत महान हैं कैसी भी परिस्थिति हो आप हमारा साथ नहीं छोड़ते हैं कई बार हमारे लिए कष्ट उठाकर आप भी हमारे साथ झुक जाते हैं आपसे ही हमारा जीवन है आप ना होते तो हम भी नहीं होते हम सब मिलकर आपकी इस सहृदयता को साष्टांग प्रणाम करते हैं।''

तना अपनी प्रशंसा सुन तनने के बजाय उन सभी को सीने से लगाते हुए बोला-''फल, फूल और पत्तियों मैं तुम्हारी इस विनम्रता को देखकर गद्‌गद हूँ और तुम लोगों ने इतना सम्मान दिया यह मेरे लिए खुशी की बात है किन्तु सत्य तो यह है कि जड़ से मुझे जो पोषण मिलता है उससे तुम लोगों को अपने से जोड़ रख पाता हूँ और दूसरी मुख्य बात यह है कि तुम सभी को मैं अपने से अलग कर दूँ तो ठूँठ कहलाऊँगा फिर कोई भी मुझे काट कर आसानी से ले जाएगा और मेरी जीवन लीला ही समाप्त हो जाएगी।

इसलिए तुम सभी को मैं अपना प्राण रक्षक मानता हूँ। तुम लोग मुझसे अधिक श्रेष्ठ हो।''

तने ने जिस सहजता पूर्वक सत्यता से अवगत करवाया वास्तव में वह नमनीय है यह सोच फल, फूल और पत्तियाँ उसके चरणों में झुक गए।

– उज्जैन (म. प्र.)

अहसान
चित्रकथा-
कालूराम जी का लड़का कितना भला है..
जरूरत के कारण मुझसे सिर्फ तीन सौ रुपये उधार लिए हैं
पर कहने लगा जिन्दगी भर आपका अहसान नहीं भूलूंगा.
सच ही कहा..
ये तो जिन्दगी भर याद ही रखेगा चुकाएगा नहीं..

किलकारी : मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी अनूठा अनुष्ठान

इन्दौर। बाल साहित्य विमर्श केन्द्रित श्रेष्ठ आयोजनों की मणिमालिका में एक मणि और पिरोई २२–२३ मार्च २०२५ को मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा इन्दौर 'देवपुत्र' बाल पत्रिका के सभागार में राष्ट्रीय बाल साहित्य विमर्श संगोष्ठी आहूत करके। अल्पसमय में प्राप्त सूचना पर भी देश के आयोजन स्थल से दूरस्थ प्रदेशों से भी लगभग पच्चीस बाल साहित्यकार एकत्र हुए। अनेक यात्रा आरक्षण की अनुपलब्धतावश नहीं आ सके लेकिन उनका मन यहीं जुड़ा रहा। साहित्य अकादमी का शासकीय व्यवस्थायुक्त आयोजन तिसपर अकादमी निदेशक डॉ. विकास दवे का आत्मीय आमंत्रण सबके समागम के लिए लोभनीय होना ही था।

एक बड़ा कारण इस संगोष्ठी का देवपुत्र के दिवंगत संपादक श्रद्धेय श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना की स्मृति को समर्पित होना भी रहा। संगोष्ठी की सार्थकता के लिए उद्‌घाटन एवं समापन सत्रों और रात्रिकालीन बालकाव्य सम्मेलन के अतिरिक्त पाँच सत्रों की रचना की गई थी। इन विषयों का चयन ही संगोष्ठी की गुरुता व उद्देश्य का प्रकट प्रमाण है। विषय निर्धारित थे (१) बाल–साहित्य में संस्कृति विमर्श। (२) बाल साहित्य की भाषा। (३) भारत का भविष्य गढ़ता बाल साहित्य। (४) लेखकों के प्रश्न संपादकों के उत्तर। (५) बाल–साहित्य संगोष्ठियों के निकष, अनुभव और नवाचार।

उद्‌घाटन सत्र में अध्यक्षता बाल वाटिका के यशस्वी संपादक वरिष्ठ बाल साहित्य चिंतक डॉ. भेरूँलाल जी गर्ग ने की। श्री गणेश सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती वाणी जोशी (इन्दौर) की सुमधुर सरस्वती वंदना प्रस्तुति से हुई। 'देवपुत्र' बाल पत्रिका के संचालक न्यास के प्रबंध न्यासी सीए. राकेश भावसार एवं स्वर्गीय श्री. कृष्ण कुमार अष्ठाना के अनुज डॉ. अशोक अष्ठाना के साथ अकादमी निदेशक डॉ. विकास दवे मंच पर शोभायमान हुए।

मंच संचालन के सूत्रधार बने 'देवपुत्र' के संपादक श्री. गोपाल माहेश्वरी जिन्होंने द्विदिवसीय संगोष्ठी के लगभग सभी सत्रों में यह भूमिका अनवरत निर्वाह की। डॉ. दवे ने सभी अतिथि बाल साहित्यकारों का पुष्पगुच्छ से भावभीना स्वागत कर आयोजन की भावभूमि स्पष्ट की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. भेरूँलाल जी गर्ग ने स्वीकारी। इस सत्र के वक्तागण रहे श्री. शिवमोहन यादव (दिल्ली), डॉ. शीला मिश्रा (भोपाल), श्री. नंदकिशोर निर्झर (चित्तौड़गढ़), बाल भास्कर की संपादक डॉ. इंदिरा त्रिवेदी (भोपाल) एवं डॉ. प्रीति प्रवीण खरे।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ एवं नवाचारी बाल साहित्यकार डॉ. समीर गांगुली (मुंबई) ने की। इस सत्र के वक्तावृंद में सम्मिलित थे श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव (भोपाल), डॉ. मीनू पांडेय (भोपाल), शशि पुरवार (नागपुर), डॉ. सत्यनारायण 'सत्य' (रायपुर) एवं श्री. ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' (रतनगढ़)।

तृतीय सत्र सलिला साहित्यिक संस्था की अधिष्ठात्री डॉ. विमला भंडारी (सलूंबर) की सारस्वत अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सत्र में वरेण्य बाल साहित्यकार डॉ. पूजा अलापुरिया (मुंबई), श्रीमती अनुराधा शुक्ला (मरवाही), श्रीमती रोचिका शर्मा (चैन्नई), श्रीमती समीक्षा तैलंग (पुणे) और श्री. घनश्याम मैथिल 'अमृत' सहभागी हुए। रात्रिकालीन सत्र में अनेक रचनाकारों ने अपनी बाल कविताओं की सरस प्रस्तुति दी। इस बाल कवि सम्मेलन का रोचक संचालन श्रीमती वर्षा महेश कोष्टा (मुंबई) ने किया और अध्यक्षता बच्चों के समाचार पत्र 'टाबर टोली' के संपादक श्री. दीनदयाल शर्मा (हनुमान गढ़) ने की।

अगले दिन संगोष्ठी का चतुर्थ सत्र श्री. रजनीकांत शुक्ल (दिल्ली) की अध्यक्षता में श्रीमती नीना सिंह सोलंकी (भोपाल), श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' (भीलवाड़ा) एवं श्रीमती वर्षा महेश (मुंबई) के सारस्वत वक्तव्यों के साथ सम्पन्न हुआ।

पाँचवाँ और अंतिम सत्र श्री. दीनदयाल शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित था। मंच पर डॉ. भेरूँलाल गर्ग, श्री. गोपाल माहेश्वरी, डॉ. विमला भंडारी, श्रीमती इंदिरा त्रिवेदी, श्री. रजनीकांत शुक्ल, श्री. पंकज

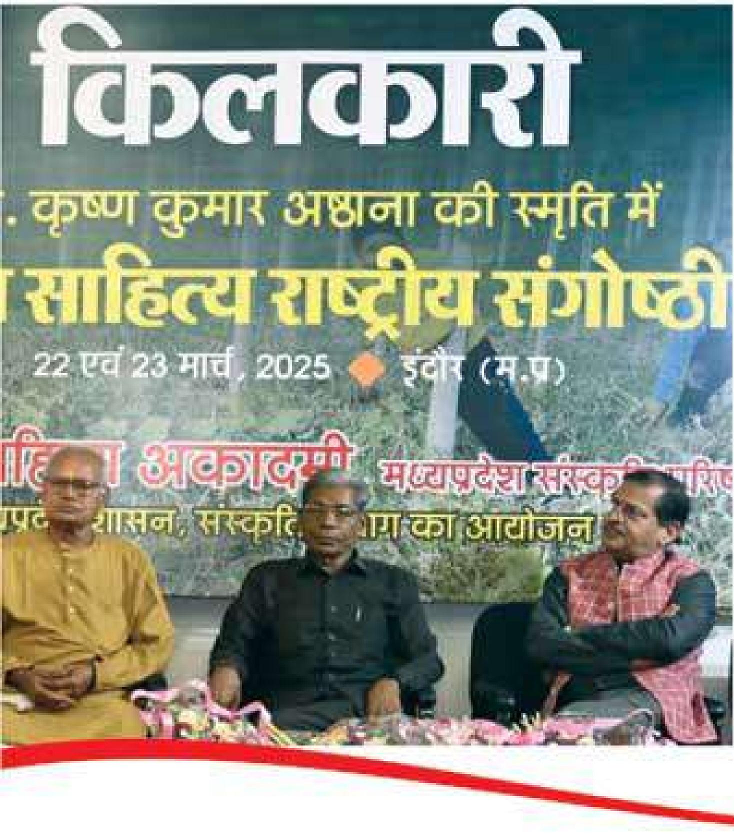

चतुर्वेदी जैसे वरिष्ठ संपादकगण विराजमान थे।

इस सत्र में लेखकों को उनकी जिज्ञासा समाधान का अवसर प्राप्त हुआ। श्री. रजनीकांत शुक्ल (दिल्ली) की अध्यंक्षता में श्रीमती नीनासिंह सोलंकी (भोपाल), श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' (भीलवाड़ा) एवं श्रीमती वर्षा महेश (मुंबई) के सारस्वत वक्तव्यों के साथ सम्पन्न हुआ। इस सत्र में 'सभी समाचार–पत्र व पत्रिकाओं में बाल साहित्य का स्थान सुनिश्चित हो' 'डॉ. विकास दवे द्वारा प्रस्तुत यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। इन सत्रों में श्री. दीनदयाल शर्मा की पुस्तकों 'फैसला' (रेडियो बाल नाटक), 'चिंटू पिंटू की सूझ' (बाल कहानी संग्रह), 'पापा झूठ नहीं बोलते' (बाल कहानी संग्रह), 'सपने' (बाल नाटक) और 'प्रेरणाप्रद बाल पहेलियाँ' तथा डॉ. प्रीति प्रवीण खरे की पुस्तकें 'अमरगाथा एकांकी' व 'रोचक एकांकी संग्रह', श्रीमती वर्षा महेश कोष्टा की पुस्तक 'क्षितिज की ओर', श्री. ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' की कृति 'दोस्ती का सफर' तथा श्री. रजनीकांत शुक्ल की पुस्तक 'नन्हे जगमग तारे' का लोकार्पण भी ओंकार ध्वनि द्वारा हुआ। इस अवसर पर 'देवपुत्र' के अप्रैल अंक का लोकार्पण भी किया गया।

इस समापन सत्र में महू की यशस्वी विधायक और ओजस्वी वक्ता, पूर्व संस्कृति मंत्री सुश्री उषा ठाकुर का मुख्य आतिथ्य प्राप्त हुआ। डॉ. विकास दवे ने संगोष्ठी का सारगर्भित निकष प्रस्तुत किया। सभी प्रतिभागियों को अभिनंदन पत्र प्रदान किए गए। स्थानीय संयोजक श्री. गोपाल माहेश्वरी द्वारा भावभीने कृतज्ञता ज्ञापन के साथ संगोष्ठी सम्पूर्ण हुई।

भारतीयता से ओतप्रोत, संस्कृति निष्ठा, स्वभाषा प्रेम और राष्ट्रीय कर्त्तव्य बोध के परिप्रेक्ष्य में बाल–साहित्य की भूमिका इस संगोष्ठी का मुख्य स्वर रहा। आवास, भोजनादि प्रबंधन का दायित्व श्री. राकेश सिंह (साहित्य अकादमी), श्री. नारायण चौहान (प्रबंध संपादक देवपुत्र) एवं उनके सहयोगियों ने कुशलतापूर्वक निर्वहन किया।

शिशुपाल की जन्म कथा

– मोहनलाल जोशी

एक बहुत ही प्रतापी राजा था। उसका नाम दमघोष था। वह छेदी देश का राजा था। दमघोष की पत्नी वसुदेव जी की बहिन थी।

राजा दमघोष के एक पुत्र हुआ। उसका नाम शिशुपाल था। जन्म के समय शिशुपाल का शरीर विचित्र था। उसके ललाट पर एक आँख थी। यह सब देखकर महारानी भयभीत हो गई। उसने पुत्र को त्याग देने का विचार किया।

तभी आकाशवाणी हुई। यह बालक बहुत ही प्रतापी राजा बनेगा। जिसके गोद में बैठने पर इसके तीसरी आँख तथा अतिरिक्त हाथ गायब हो जाएँगे, उसी के हाथों इसकी मृत्यु होगी। इसका त्याग मत करो।

महारानी ने शिशुपाल को सबकी गोदी में रखा। श्रीकृष्ण की गोद में रखते ही वह ठीक हो गया। रानी ने कहा कृष्ण यह तुम्हारा भुआ का पुत्र है। इससे सौ गलतियाँ भी हो जाए तो क्षमा कर दोगे यह वचन दो। श्रीकृष्ण ने भुआ को यह वचन दे दिया।

कृष्ण की महिमा और शिशुपाल वध

राजसूय यज्ञ चल रहा था। भीष्मजी ने शिशुपाल को अनर्गल बात करते देखा। भीष्मजी ने कृष्ण भगवान की महिमा का वर्णन किया।

भीष्मजी बोले– श्रीकृष्ण ही सबसे बड़े भगवान हैं। जब चराचर जगत की उत्पत्ति हुई, इन्होंने मधु–कैटभ का वध किया। वराह अवतार धारण कर पृथ्वी को रसातल से बाहर निकाला। मत्स्य अवतार धारण कर वेदों की रक्षा की। राम का अवतार धारण कर रावण का संहार किया। जब भी धरती पर पाप बढ़ता रहै है, ये स्वयं अवतार लेते हैं। पापों का नाश करते हैं। प्रलय होने पर क्षीरसागर में सो जाते हैं। यहाँ बैठे सभी राजा कृष्ण से परास्त हुए हैं।

इतना कहने पर शिशुपाल शांत नहीं हुआ। वह श्रीकृष्ण को गाली देता रहा। भगवान उसे गिन रहे थे। सौ गाली पूरी होते ही श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र चलाया। शिशुपाल का वध कर दिया। फिर शान्ति से यज्ञ पूर्ण हुआ।

– बाड़मेर
(राजस्थान)

कविता

श्रम से मिलता मीठा फल

– डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी

मैं खड़ा था अपनी छत पर,
वहाँ से देखा सीधे ऊपर।
नभ में उड़ रहा था खग,
मैंने कहा घुमा दो जग।

बोला पढ़ कर पंख लगाना,
मुझसे भी ऊपर उड़ जाना।
सुनकर पक्षी की यह बात,
नींद न आई मुझको रात।

मन लगाकर लिखा-पढ़ा,
पक्षियों से भी ऊपर उड़ा।
जो हिम्मत से लेते काम,
कमाते जग में वे ही नाम।

टालो मत बोलकर बात,
करो मेहनत हर दिन-रात।
श्रम से मिलता मीठा फल,
होता सुखमय उससे कल।

– देहरादून
(उत्तराखण्ड)

छः अँगुल मुस्कान

एक डॉक्टर बच्चे के पैर का टाँका काटने आया।

डॉक्टर– बेटा वह ऊपर देखो सोने की चिड़िया।

बच्चा– आप नीचे देखो ठीक से, कहीं पैर न कट जाए। बड़े आए चिड़िया का मामा।

*****

जेलर– तुम्हें कल सुबह पाँच बजे फाँसी दे दी जाएगी।

कैदी– हा.... हा..... हा...., ऐसा हो ही नहीं सकता।

जेलर– हँस क्यों रहे हो ?

कैदी– मैं तो सुबह ९ बजे तो सो कर ही उठता हूँ।

*****

ट्रेफिक पुलिस– गाड़ी से निकलो भाई साहब! आपका चालान होगा। आप १०० की स्पीड से भाग रहे हो।

कार सवार– क्या करूँ साहब! बोर्ड पर लिखा है– 'याद रखें, घर पर कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।'

*****

सास ने फ्रिज खोला– अंदर देखकर चकराई और अपनी नई बहू से पूछा– 'ये मंदिर का घंटा फ्रिज में क्यों रखा है ?'

नई बहू का उत्तर था, 'व्यंजन वाली किताब में लिखा है कि सब चीजों का मिश्रण कर लें और एक घंटा फ्रिज में रखें।'

उल्कापिंड

– महेश कुमार केशरी

विनय जी विज्ञान के आचार्य थे। मोनू और दीपू कक्षा में आपस में किसी बात पर उलझे हुए थे। तभी विनय जी कक्षा में बच्चों को पढ़ाने के लिए आए।

मोनू और दीपू नौंवी कक्षा में पढ़ते थे। उनको विज्ञान और विशेषकर खगोल विज्ञान में बहुत रुचि थी। वे प्रतिदिन कुछ न कुछ खगोल विज्ञान से संबंधित चीजें विनय जी से पूछते रहते।

इस तरह मोनू और दीपू विनय जी के चहेते शिष्यों में से थे। और इन दोनों छात्रों से विनय जी का एक तरह से मित्रवत संबंध था। विनय जी उनकी खगोल विज्ञान संबंधी जिज्ञासाओं को भरसक शांत करते। जितना अधिक से अधिक हो पाता विनय जी उनको समझाते रहते। किन्तु इन दो मेधावी और जिज्ञासु छात्रों की जिज्ञासा का कोई अंत नहीं था। वे जितना जानना चाहते उनकी जिज्ञासा और बढ़ती जाती थी।

आज वे डायनासोर के संबंध में उलझे हुए थे। दीपू कह रहा था कि डायनासोर आखिर पृथ्वी से कैसे गायब हो गए। हो ना हो उस समय पृथ्वी पर भयंकर बाढ़ आई होगी। तभी इतने विशालकाय डायनासोर पृथ्वी पर से गायब हो गए।

मोबू बोला– नहीं–नहीं उस समय इस पृथ्वी पर किसी प्राकृतिक आपदा के कारण आ लगी होती। इस कारण से ही सारे डायनासोर जलकर मर गए होंगे। विनय जी जब कक्षा में आए तो मोनू और दीपू ने अपनी जिज्ञासा विनय जी को बताई।

विनय जी हँसते हुए बोले– आग और पानी से डायनासोर गायब नहीं हुए। बल्कि उसके पीछे कोई और कारण था। जो आग और बाढ़ जैसी तबाही से मिलता–जुलता था। तुम बच्चों की रुचि इस घटना को जानने में है ना कि इस धरती पर के विशालकाय डायनासोर की प्रजाति आखिर कैसे विलुप्त हो गई।

सब बच्चे क्रमशः मोनू, दीपू, अनंत, पूजा, पल्लवी, आरव, मोहन, गुड्डू ने एक स्वर में कहा हाँ सर! हाँ आचार्यजी! बताइए डायनासोर के गायब होने की कहानी।

कक्षा में एकदम से शांति छा गई। लगा जैसे शाला में छुट्टी हो गई हो। और सब बच्चे घर चले गए हों। तब विनय जी ने बताना आरंभ किया। बच्चों आज से लगभग छः साढ़े छः करोड़ वर्ष पहले हमारे इस नीले ग्रह पर डायनासोर जैसे शाकाहारी और माँसाहारी दोनों प्रकार के डायनासोर रहते थे।

डायनासोर को जानने के बाद हमें यह जानने की उत्सुकता हो जाती है कि डायनासोर जैसे बड़े जीव आखिरकार इस पृथ्वी से कैसे गायब हो गए? उससे पहले हमें यह जानना होगा कि आप लोग टूटते तारों के बारे में अपने आस–पास के लोगों से अवश्य सुनते होंगे। ये टूटता तारा आखिर क्या होता है? कोई बता सकता है? इस टूटते हुए तारे के बारे में? कि आखिर टूटता तारा होता क्या है? कक्षा में किसी के मुँह से कोई आवाज नहीं निकल रही थी। जैसे कक्षा में सोता पड़ गया हो।

तब विनय जी आगे बताने लगे। असर में जब पृथ्वी पर बहुत से छोटे–छोटे ग्रह गिरते हैं, तो ये वास्तव में उल्कापिंड ही होते हैं। जिनको हम लोग ना समझी में टूटता हुआ तारा समझ लेते हैं। या दूसरों के मुँह से हम ऐसा कहते हुए अधिकांश सुनते हैं। असल में ये उल्कापिंड ही होते हैं। जिसको हम टूटता हुआ तारा समझ लेते हैं।

जिसको खगोल विज्ञान की भाषा में हम लोग क्षुद्र ग्रह या उल्कापिंड कहते हैं। जब ये उल्कापिंड हमारे वायुमंडल में प्रवेश करते हैं तो उससे बहुत ही अधिक घर्षण या दबाव पड़ता है। इस घर्षण या दबाव पड़ने के कारण ही ये उल्कापिंड जलने लगते हैं। आपको पता है कि हमारा वायुमंडल छः सौ चालीस किलोमीटर लंबा है। और इसके कारण ही हमारे ग्रह पृथ्वी पर कोई भी

उल्कापिंड या क्षुद्र ग्रह सीधे आकर नहीं टकरा पाता। और इस तरह हमारी पृथ्वी पर जीवन बचा रह जाता है। वास्तव में हमारी पृथ्वी पर यदि हम सुरक्षित हैं तो इसका सारा श्रेय हमारे वायुमंडल को जाता है। जो हमारी रक्षा करता है।

यदि पृथ्वी पर हमारा वायुमंडल नहीं होता तो प्रतिदिन बहुत सारे क्षुद्र ग्रह हमारी पृथ्वी से टकराते। और हमारी पृथ्वी पर का जीवन नष्ट हो जाता। तो हमारे वायुमंडल का हमारे बचे रहने में बहुत बड़ा योगदान है।

लेकिन तब प्रश्न उठता है कि ये क्षुद्र ग्रह या उल्कापिंड पृथ्वी पर ही आखिर क्यों गिरते हैं। तो उसके लिए आप लोगों को हमारे सौर परिवार और उसकी संरचना को समझना होगा। जैसा कि हम जानते हैं कि हमारे सौर परिवार में हमारे सूर्य के सबसे निकट का ग्रह बुध है। उससे दूर का ग्रह शुक्र है। उसके बाद पृथ्वी का नंबर आता है। उसके बाद मंगल ग्रह का नंबर आता है। उसके बाद बृहस्पति ग्रह आता है। ये सारे ग्रह सूर्य के चक्कर एक निश्चित समय या अंतराल पर लगाते रहते हैं।

हमारे सौर परिवार में मंगल और बृहस्पति के अत्याधिक गुरुत्वाकर्षण के कारण बहुत से छोटे ग्रह या क्षुद्र ग्रह खिंचे चले आते हैं। जिनको की हम उल्कापिंड या क्षुद्र ग्रह भी कहते हैं। आकार में बड़े होने के कारण ये स्वत: ही बृहस्पति ग्रह और उसके बाद मंगल ग्रह पर खिंचे चले आते हैं। मंगल के गुरुत्वाकर्षण के कारण जब ये उल्कापिंड खिंचे चले आते हैं। तब तक मंगल ग्रह अपनी कक्षा में आगे बढ़ चुका होता है। और इस तरह ये क्षुद्र ग्रह या उल्कापिंड सीधे मंगल ग्रह पर ना गिरकर पृथ्वी पर गिर जाते हैं। जब ये उल्कापिंड गिरते हैं तो हमारे वायुमंडल में दबाव या घर्षण के कारण वे जलने लगते हैं। जिसको दूर से देखकर हमें लगता है कि ये कोई टूटता हुआ तारा है। यो कोई टूटता हुआ तारा नहीं बल्कि जलते हुए उल्कापिंड होते हैं। आपको पता है कि ये उल्कापिंड हमारे वायुमंडल में बहत्तर किलोमीटर प्रति सेकेंड की दर से प्रवेश करते हैं। जिससे बहुत

अधिक घर्षण पैदा होता है। और ये उल्कापिंड जलने लगते हैं। जिसको दूर से देखकर हम टूटा हुआ तारा मान लेते हैं।

ऐसे सैकड़ों छोटे-बड़े उल्कापिंड हमारे ग्रह पृथ्वी से रोज आकर टकराते रहते हैं। जो आकार में बहुत छोटे होते हैं। इसलिए हमें वे दिखाई भी नहीं देते।

मैं आपको पृथ्वी के बारे में कुछ रोचक तथ्य बताना चाहता हूँ। आज जो हमारे यहाँ पृथ्वी पर का एक दिन चौबीस घंटे का होता है। वह आज से नौ सौ मिलियन वर्ष पहले अठारह घंटे का होता था। आप सोचेंगे कि आखिर ऐसा कैसे होता होगा? असल में ये जो उल्कापिंड हैं। वे करोड़ों वर्षों से पृथ्वी पर लगातार गिरते आ रहे हैं। जिससे कि पृथ्वी का वजन लगातार बढ़ता जा रहा है। आज से नौ सौ मिलियन वर्ष पहले पृथ्वी पर का एक दिन केवल अठारह घंटे का होता था। आज से ठीक नौ सौ मिलियन वर्षों के बाद पृथ्वी का एक दिन तीस घंटे का होगा।

ऐसा इसलिए होगा कि हमारी पृथ्वी पर प्रतिदिन उल्कापिंड टकराते रहते हैं। जिससे हमारी पृथ्वी का द्रव्यमान लगातार बढ़ता जा रहा है। जिससे कि हमारी पृथ्वी को सूर्य का एक चक्कर लगाने में समय भी अधिक लगेगा।

तो ऐसा ही एक उल्कापिंड आज से साढ़े छ: सौ

करोड़ वर्ष पहले हमारी पृथ्वी पर गिरा था। उसका नाम इजिप्टा था। ये मैक्सिको की खाड़ी में गिरा था। जिस समय ये हमारी पृथ्वी पर गिरा था। उस समय हमारी पृथ्वी पर बहुत बड़ा क्रेटर यानि गड्ढा बन गया था। उस समय हमारी पृथ्वी का तापमान दो सौ डिग्री सेंटीग्रेड तक हो गया था।

इसको ऐसे समझना चाहिए कि इजिप्टा के गिरने से हमारी पृथ्वी पर बीस हाईड्रोजन बम के फटने जैसा तापमान पैदा हो गया था। एक तरफ तो ये घटना हुई। उसी समय पृथ्वी पर दस रिक्टर स्केल का भूकंप भी आ गया था। पृथ्वी पर अचानक से गिरने वाले इस क्षुद्र ग्रह इजिप्टा के कारण पृथ्वी पर जीवन का समूल नाश हो गया था। और इसमें विशालकाय डायनासोर भी नष्ट हो गए थे। इतने जबरदस्त टकराव के कारण पृथ्वी पर सुनामी आ गई थी।

समुद्र बहुत ऊपर उठ गया था। जहाँ समुद्र था वहाँ रेगिस्तान बन गया। जहाँ रेगिस्तान था, वहाँ समुद्र बन गया। हिमालय की तराई में खुदाई करने पर आज भी मगरमच्छ के जीवाश्म मिलते हैं। सहारा के रेगिस्तान में शार्क मछलियों के जीवाश्म मिलते हैं।

इजिप्टा के पृथ्वी पर टकराने के बाद पृथ्वी का जलस्तर अचानक से बहुत तेजी से बढ़ गया। उस समय जमीन के नीचे या जमीन में बिल बनाकर रहने वाले छोटे जीव ही इस पृथ्वी पर बचे रह पाए।

जैसे–चूहा जो बिलों में रहता था। वह सुरक्षित बचा रह गया। समुद्र के अंदर बहुत ही गहराई में रहने वाली कुछ मछलियाँ और कछुए भी जीवित रह गए। और इस तरह से धरती पर रहने वाले विशालकाय डायनासोर का अंत हो गया।

बच्चे बहुत ध्यान से विनय आचार्यजी की बताई खगोल विज्ञान की कहानी सुन रहे थे। तभी घंटी बज गई। विनय जी ने छात्रों से ये वायदा किया कि खगोल विज्ञान की और रोचक और मजेदार कहानियाँ वो बच्चों को अगली कक्षा में सुनाएँगे।

– बोकारो (झारखण्ड)

पहेलियाँ

बाल पहेलियाँ

– कैलाश त्रिपाठी

(१)
जब हमें मानते सभी बड़ा,
तब सब छोटे बन जाते।
डाला जाता हमें दही में,
चटनी डाल सभी हैं खाते।

(२)
यह कैसी वर्षा रात की,
रहता घास–पात पर पानी।
पशु–पक्षी प्यासे ही रहते,
कहीं न उनको मिलता पानी।

(३)
डण्डा लम्बा एक हरा है,
जिसके अन्दर रस भरा है।
गुण–चीनी के आता काम,
आप बताएँ उसका नाम।

(४)
बाहर होता कवच खुरदरा,
सफेद मुलायम अण्डा अन्दर।
उसके भीतर रहती गुठली,
मीठा प्यारा फल है सुन्दर।

(५)
झाँसी की रक्षा में जिसने,
कभी हार न मानी थी।
अँग्रेजों से युद्ध लड़ा था,
वह वीर कौन–सी रानी थी।

– औरैया (उ. प्र.)

उत्तर– १) दहीबड़ा। २) ओस। ३) गन्ना। ४) लीची। ५) लक्ष्मीबाई।

माँ का प्यार

– डॉ. अलका जैन 'आराधना'

मैं अकेला एक दिन,
घर में हो रहा था बोर।
गरमियों के दिन थे,
पसरा था सन्नाटा हर ओर।
माँ गईं हुईं थीं ऑफिस,
मुझे था उनका इंतजार।
यही सोच रहा था मैं,
आकर माँ करेंगीं प्यार।
थोड़ी देर में माँ आईं,
इक प्यारा सा टेडी लाईं।
टेडी मुझे बहुत भाया,
उसे गले मैंने लगाया।
माँ बोलीं– जब हो उदास,
इसे गले से तुम लगाना,
करना इससे मन की बातें,
मुझे पास तुम अपने पाना।
माँ ने समझाया बहुत,
पर बात मुझे समझ न आई।
भीगी आँखों से मैं बोला,
यूँ न होगी तुम्हारी भरपाई।
माँ तुम रहो साथ मेरे,
तुम ही हो मेरा संसार।
खेल–खिलौने नहीं चाहिए,
बस चाहिए माँ का प्यारा।

– जयपुर (राजस्थान)

राष्ट्रभक्ति में समर्पित पुष्प

– नारायण चौहान

प्यारे बच्चो!

आप आनंद में होंगे। पिछली कड़ियों में मैंने आपको मेरा संचालन करने वाले सबसे ऊपर के दायित्व के सरसंघचालकों के संदर्भ में बताया था। आज मैं आपको संघ के तृतीय एवं चतुर्थ सरसंघचालकों के बारे में जानकारी दे रहा हूँ।

मेरे कार्य विस्तार के साथ–साथ मेरे कार्य में कई उतार–चढ़ाव आए आद्य सरसंघचालक प. पू. डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के बाद लम्बे समय तक द्वितीय सरसंघचालक प. पू. माधवराव सदाशिवराव गोलवळकर (गुरुजी) ने मेरा संचालन किया। प. पू. गुरुजी के बाद मेरे कार्य संचालन के लिए तृतीय सरसंघचालक के दायित्व हेतु श्री. मधुकर दत्तात्रेय देवरस उपाख्य बाळासाहेब को १९७३ में नियुक्त किया गया। बाळासाहेब देवरस का जन्म ११ दिसम्बर १९१५ को नागपुर महाराष्ट्र में हुआ था। वे किशोर वय से ही संघ की गतिविधियों में सक्रिय थे और डॉ. हेडगेवार के सम्पर्क में आ गए थे।

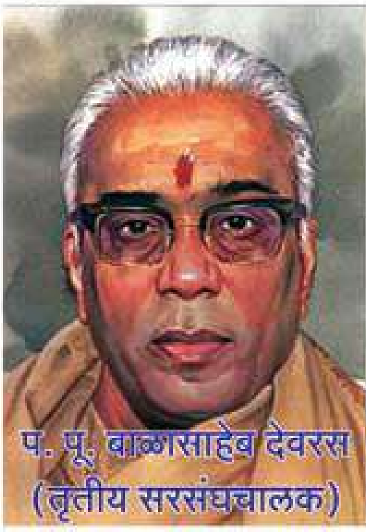
प. पू. बाळासाहेब देवरस (तृतीय सरसंघचालक)

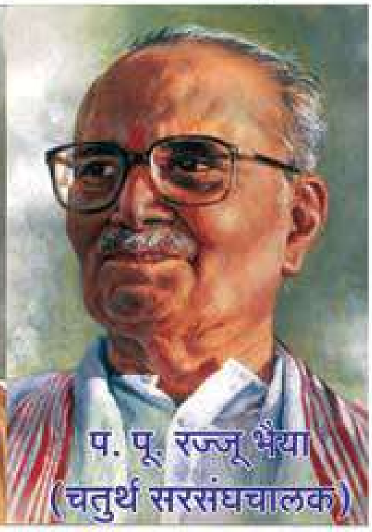
प. पू. रज्जू भैया (चतुर्थ सरसंघचालक)

१९७३ में जब बाळासाहेब को सरसंघचालक नियुक्त किया गया तब देश की सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियाँ बहुत जटिल थी।

१९७५ में जब भारत में आपातकाल लगा तब मेरे ऊपर भी केन्द्र सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था। इस कठिन समय में बाळासाहेब ने संघ के स्वयंसेवकों को संगठित रखा तथा लोकतंत्र की बहाली के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हजारों स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह किया। हजारों स्वयंसेवकों को जेल में डाला गया। मेरी भूमिका से देश में आशा की एक नई किरण और ऊर्जा प्राप्त हुई। इसी समय मेरी विचारधारा बहुत लोकप्रिय हुई।

बाळासाहेब देवरस ने हिन्दू समाज की एकता पर जोर दिया। सामाजिक अस्पृश्यता को उन्होंने समाज की बहुत बड़ी बुराई माना। अत: इसे समाप्त कर हिन्दू समाज को समरस करने के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित किए। जातिगत भेदभावों को समाप्त करने हेतु उन्होंने कहा था– ''यदि अश्पृश्यता पाप नहीं है तो दुनिया में कुछ भी पाप नहीं है।''

उन्होंने सभी वर्गों एवं जातियों के उत्थान के लिए कार्य किया। १९९४ में उनका स्वास्थ्य अधिक खराब रहने लगा। उन्हें लगा मैं दायित्व के साथ न्याय नहीं कर रहा हूँ। तब चतुर्थ सरसंघचालक के रूप में प्रो. राजेन्द्र सिंह जिन्हें 'रज्जू भैया' के नाम से भी जाना जाता है उन्हें यह दायित्व सौंप दिया।

रज्जू भैया का जन्म २९ जनवरी १९२२ को उत्तरप्रदेश के बुलंद शहर में हुआ। वे अत्यन्त मेधावी छात्र थे। उन्होंने भौतिकी विषय से प्रयागराज विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। बाद में वे इसी विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्राध्यापक नियुक्त हुए।

उनकी प्रतिभा को इस बात से समझा जा सकता है। कि प्रसिद्ध वैज्ञानिक सी. वी. रमन ने उन्हें अपने साथ शोध कार्य करने हेतु आमंत्रित किया था। किन्तु रज्जू भैया ने संघ कार्य को प्राथमिकता दी और

संघ के प्रचारक बन गए।

रज्जू भैया १९६६ में मेरे अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख बने। बाळासाहेब के बाद उन्हें चतुर्थ सरसंघचालक के रूप में दायित्व प्राप्त हुआ। इसके पूर्व रज्जू भैया ने सरकार्यवाह के दायित्व का निर्वहन किया। रज्जू भैया का व्यक्तित्व बहुत ही सहज और सरल था।

रज्जू भैया का स्वास्थ्य भी वर्ष २००० तक आते आते दायित्व के अनुकूल नहीं रहा। स्वयं ने इस दायित्व से मुक्त होने की इच्छा व्यक्त की उनके बाद श्री. कुप्प. सी. सुदर्शन मेरे सरसंघचालक बने।

मेरी यह यात्रा राष्ट्रभक्ति की यात्रा है। मेरे संवाहक स्वयंसेवक हैं। उन्हीं स्वयंसेवकों द्वारा मेरे कार्य का संचालन होता है। अगली कड़ी में मैं पंचम सरसंघचालक श्री. सुदर्शन जी एवं वर्तमान सरसंघचालक के संदर्भ में जानकारी दूँगा।

– इन्दौर (म. प्र.)

संपादक जी देवपुत्र का मार्च २०२५ का अंक प्राप्त कर जी प्रफुल्लित हो गया। प्रासंगिकता की दृष्टि से सारस्वत सृष्टि का उजास जैसा आभास इंद्रधनुषी मुखपृष्ठ कराता है। वास्तव में उत्कृष्ट ही आकृष्ट कर सकता है। होली जैसे पावन पर्व को अमर्यादित ढंग से मनाने का चलन जितना लज्जास्पद है, उतना हास्यास्पद भी है। 'बुरा न मानो होली है' की आड़ में सकारात्मक प्रह्लाद को भुलाकर नकारात्मक होलिका का मनचाहा प्रदर्शन अंधपरंपरा का ही रूप है। जिस उत्सव का परिणाम प्रदूषण हो शुभता की शुभ्रता न होकर अशुभता की कुरूपता हो तो वह मात्र तमाशा है, पानी में बताशा है।

आपने संपादकीय 'अपनी बात' में यह स्पष्ट कर दिया है कि सफेद रंग से सात रंग जनमते हैं। ये अपना अहं छोड़कर सतरंगी से बहुरंगी होकर अनेकता में एकता अर्थात् समरसता का संदेश अपने देश को देते हैं। ये सभी हार्दिक सामंजस्य के ठीक तथा सटीक प्रतीक हैं। तन से अधिक मन रंगना ही उत्सवी सार्थकता को प्राथमिकता प्रदान करना है। अपनी तरह जीवधारी वृक्षों का विनाश करना अपना भावी महाविनाश है। प्रकृति के प्रति क्रूरता और सामाजिक स्तर पर अभद्रता घोर निंदनीय है। विचार ही आचार का आधार है। इस सत्य के अनुसार सभी को चेताने का आपका प्रयास बीमार के लिए अनार जैसी भूमिका निभाएगा, ऐसा सौ टंच विश्वास है। संस्कृति से लगाव बढ़ेगा।

पत्रिका में रचनाओं का चयन आपकी परोकारी अनुभवसिद्ध गुणवत्ता है, जिसमें प्रभान्वित व लाभान्वित करने की क्षमता है। मुझे यह भरोसा है कि भटकी हुई यह नई पीढ़ी भी आपकी संवेदनशील अपील से अवश्य सीख प्राप्त करेगी।

'बाल साहित्य की धरोहर' के अंतर्गत अथक लेखन के पर्याय शंकर सुल्तानपुरी के संदर्भ में डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' की प्रस्तुति बहुत सराहनीय है। आपकी टीम को भी बधाई सहित ढेर सारी शुभकामनाएँ।

–राजा चौरसिया, उमरियापान,
कटनी (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

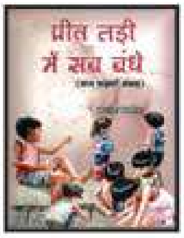

प्रीत लड़ी में सब बंधे
मूल्य- २००/-

बाल साहित्यकार **श्री. राजेश अरोड़ा** द्वारा रचित छोटी-छोटी सरस सुंदर ग्यारह बाल कहानियों का यह संकलन एक पठनीय बाल कहानी संग्रह है।

प्रकाशक- नवकिरण प्रकाशन, विस्सों का चौक, बीकानेर (राजस्थान)

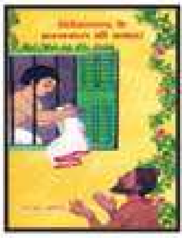

विवेकानंद के बाल्यकाल की कथाएँ
मूल्य- ८०/-

ख्यात बाल साहित्य सर्जक **श्री. उमेशकुमार चौरसिया** जी द्वारा स्वामी विवेकानंद जी के बाल्यकाल की बच्चों में प्रेरणा जगाती घटनाओं की रोचक प्रस्तुति।

प्रकाशक- विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी, विवेकानंद केन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग, 'योगक्षेत्र' गीताभवन, जोधपुर-३४२००३ (राजस्थान)

गोलू बंदर
मूल्य- १५/-

श्री. उमेशकुमार चौरसिया बाल नाटक लेखन में सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं। प्रस्तुत संकलन में आपकी तीन बाल नाटिकाएँ संकलित हैं।

प्रकाशक- अजमेरा बुक कम्पनी, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर (राजस्थान)

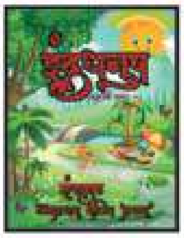

इंद्रधनुष
मूल्य- २५०/-

यह **श्री. ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'** के संपादन में प्रकाशित बाल कहानी माला का पाँचवाँ पुष्प है। इसमें समकालीन प्रसिद्ध बाल कहानीकारों की कहानियाँ संकलित हैं साथ ही बच्चों के मनोरंजन व बौद्धिक विकास के लिए चित्र पहेलियाँ भी बीच-बीच में पिरोई गई हैं जिनमें रंग भर कर के, एक और अभिरुचि पूर्ण कर सकते हैं।

प्रकाशक- एक्सप्रेस पब्लिशिंग नम्बर ८, ३ क्रास स्ट्रीट, चेन्नई-६००००४ (तमिलनाडु)

बच्चों के सुपरमैन
मूल्य- २४९/-

श्री. सुरेश सौरभ और **श्री. रमाकांत चौधरी** के संयुक्त संपादन में ३९ स्वनाम धन्य बाल साहित्यकारों की देश की महान विभूतियों पर केन्द्रित बाल कविताओं का यह संकलन निश्चित रूप से बहुत ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक जानकारी से परिपूर्ण है।

प्रकाशक- श्वेत वर्णा प्रकाशन, २१२-ए, एक्सप्रेस व्यू अपार्टमेंट, सुपर एमआजी, सेक्टर-९३ नोएडा-२०१३०४ (उत्तर प्रदेश)

परवाह नहीं

चित्रकथाः देवांशु वत्स

कविता

उज्ज्वल दिन, उज्ज्वल रातें

– रामनेरश 'उज्ज्वल'

ईश्वर इतना दे हमको। हम भी दे पाएँ सबको।।

कभी न कोई दिक्कत हो, सदा हमारी इज्जत हो
उन्नति के पथ पर चढ़कर, छू लें हम फौरन नभ को।

सेवा भाव भरें मन में, रोग–दोख ना हो तन में
मदद सभी की कर पाएँ, आप बढ़ाएँ ताकत को।

कभी नहीं अपराध करें, लोभ–मोह सब आप हरें
बुद्धि विवेक जोश जगे, पा लें अपनी मंजिल को।

राह चलें सच्चाई की, बात करें अच्छाई की
तन–मन में हो निश्छलता, त्यागें दंभ और छल को।

आँसू भी पी जाएँ हम, खुशियों को फैलाएँ हम
कलरव गूँजे हर घर में, सुरभित कर दें जीवन को।

राष्ट्र प्रेम की अलख जगे, सबसे न्यारा देश लगे
अगर जरूरत पड़े कभी, कटा सकें अपने सर को।

मुश्किल में घबराएँ ना, बिना बात टकराए ना
उज्ज्वल दिन, उज्ज्वल रातें, उज्ज्वल कर दें जंगल को।

– लखनऊ
(उ. प्र.)

लघुकथा

कर्तव्य

– डॉ. पूजा हेमकुमार अलापुरिया

चौराहे से कर्तव्य पथ की ओर जाने वाली सड़क सदा प्रफुल्लित दिखाई देती है। अन्य तीनों सड़कों को उसकी प्रसन्नता का भेद कभी समझ ही नहीं आता।

तीनों सड़कें मील का पत्थर से कहती हैं– ''भाई! क्या तुम्हें पता है उस ओर जाने वाली सड़क इतनी प्रसन्न क्यों रहती है?'' हमारा काम भी वही है जो इसका है। पूरा दिन लोगों के पदचाप और छोटे–बड़े वाहनों के आवागमन का भार वहन करना। कभी–कभी तो वाहनों की इस आवाजाही से हमारी चमड़ी छिल जाती है और कहीं–कहीं तो गड्ढे भी पड़ जाते हैं। हम अपने दु:ख को किसी से कह नहीं सकते इसलिए अपना मन मसोसकर रह जाते हैं, किन्तु इसकी प्रसन्नता कभी कम ही नहीं होती।''

बड़े उत्साह और गर्व से मील का पत्थर कहता है– ''पूछा था एक बार, वह कहती है कि शहीदों ने सीमा पर अपना कर्तव्य निभाया और मैं उन तक पहुँचने का मार्ग बन अपना कर्तव्य निभा रही हूँ।''

– नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

कविता

कुल्फीवाला

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

आहा ! कुल्फीवाला आया
रंगबिरंगी कुल्फी लाया।

धूम मच गयी गली–गली
बच्चों को लग रही भली

अम्मा ! मुझको पैसे दे दो
मेरा भी मन है ललचाया

इसमें है काजू–बादाम
स्वाद–सुगंध में है सरनाम

ठंडी–ठंडी मजा दे रही
गर्मी को है दूर भगाया

मुँह में रखो, शीघ्र गल जाती
दिखा–दिखाकर विभा चिढ़ाती

खाना अधिक हानिकारक है
बाबा जी ने हमें बताया

– लखनऊ
(उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०४/२०२५ प्रेषण तिथि ३०/०४/२०२५ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी